अधिवेशन विशेष

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका
राष्ट्रीय छात्रशक्ति

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

ABVP 65 राष्ट्रीय अधिवेशन

वर्ष 3 ■ अंक 08 ■ दिसंबर 2019 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 44

ब्रज में उमड़ा लघु भारत

मनोहर सरकार
विकास अपार
जल शक्ति अभियान
संचय जल, बेहतर कल
1 जुलाई – 15 सितम्बर, 2019
जल संरक्षण
की ओर
हरियाणा के बढ़ते कदम
जल संरक्षण एवं वर्षा जल संग्रहण
नए एवं पुराने दोनों सार्वजनिक भवनों की छतों पर वर्षा जल संग्रहण संरचना का निर्माण करना
पारम्परिक तथा अन्य जल निकायों/टंकियों का नवीनीकरण
गांवों एवं नगरपालिका के तालाबों की खुदाई करना एवं गाद निकालना
400 कृषि तालाबों का निर्माण
पुनः उपयोग एवं पुनर्भरण संरचनाएं
राज्य में 1.5 लाख सोक गड्ढों का निर्माण
प्रत्येक जिले में अनुपयोगी 100 बोरवेल ढांचों का पुनर्निर्माण
वाटर शैड विकास
एकीकृत जल संग्रहण प्रबन्धन कार्यक्रम के तहत 820 वर्षा जल संग्रहण ढांचों का निर्माण
लघु बांधों का निर्माण एवं नवीनीकरण
सघन वानिकी
समस्त राज्य में एक करोड़ पौधे लगाए जाएंगे
ग्रामीण विकास विभाग, हरियाणा
जल शक्ति अभियान के लिए नोडल विभाग
सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा | www.prharyana.gov.in

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 3, अंक 08
दिसंबर, 2019

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रीत।

इस अंक में

05 ब्रज में उमड़ा लघु भारत

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 65 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर एस. सुब्बैया, नवनिर्वाचित राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी व कार्यक्रम के उद्घाटनकर्ता...

संपादकीय	04
NEED OF COMPREHENSIVE REFORMS IN STATE UNIVERSITY	16
कोई भी काम एक दिन में नहीं होता, लेकिन एक दिन जरूर होता है : सागर रेड्डी	18
स्वामी विवेकानंद के प्रतिमा से हुए छेड़छाड़ के खिलाफ देशभर में विरोध प्रदर्शन	19
हमारी वैचारिक यात्रा के बढ़ते कदम: आशीष चौहान	20
THE CONCEPT OF DEVELOPMENT	22
छात्र शक्ति ने पूरी दुनिया में खुद का लोहा मनवाया: योगी आदित्यनाथ	26
PRESENT SCENARIO OF THE COUNTRY	28
डूसू ने की अपील, तदर्थ (एडहॉक) शिक्षकों की नौकरी विवाद को सुलझाएं कुलपति	29
विद्यार्थी परिषद की कार्यपद्धति, स्वरूप और प्रासंगिकता: सुनील आंबेकर	30
सम्पूर्ण भारत में नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजन्स (एनआरसी) लागू करने का फैसला स्वागत योग्य : अभाविप	31
NEW DAWN OF OPPORTUNITIES IN JAMMU–KASHMIR AND LADAKH POST ABROGATION OF ART. 370	32
CONGRATULATIONS ON THE ARRIVING OF THE LONG AWAITED VERDICTON RAM JANMABHOOMI	33
परिषद कार्यपद्धति का आधार है सामूहिकता: डॉ. एस. सुबैय्या	34
भारत में हैं रोजगार की अपार संभावनाएं : मराठे	36
सही इतिहास को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाए सरकार : शिंदे	37
मिशन साहसी: छात्राओं ने सीखे आत्मरक्षा के गुर	38
हैदराबाद की हैवानियत के खिलाफ अभाविप का देशव्यापी प्रदर्शन	39
महिला विमर्श और युवा: ममता यादव	40
राष्ट्रीय पदाधिकारी सूची	42

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

आगरा कॉलेज के प्रांगण में 65वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन। 1987 में सम्पन्न हुए अधिवेशन की तुलना में संख्या में छोटा। किन्तु आयामों के विस्तृत फलक को समाये। पूर्व कार्यकर्ता जो पिछले अधिवेशन की व्यवस्था में लगे थे, आज भी देख-रेख और व्यवस्थाओं की साज-संभाल में जुटे थे। परिषद के बढ़ते आयाम और विस्तार लेती भूमिका इन पूर्व कार्यकर्ताओं को संतोष की अनुभूति कराते हैं।

संगठन कार्य की निरंतरता में कैसे पीढ़िया बदलती हैं, इसका साक्षी भी यह अधिवेशन बना। गत 16 वर्षों से अखिल भारतीय संगठन मंत्री का दायित्व संभाल रहे श्री सुनील आम्बेकर और उनके सहयोगी के रूप में कार्य कर रहे श्री रघुनंदन संगठन में एक यशस्वी भूमिका निभाने के बाद दायित्वमुक्त हुए। आजीवन समाजसेवा का व्रत लेकर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में शिक्षा-क्षेत्र को अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ वर्ष समर्पित करने वाले यह दोनों ही कार्यकर्ता इसी व्यापक संदर्भ को लेकर समाजजीवन के किसी अन्य क्षेत्र में अब अपना योगदान देंगे।

श्री आम्बेकर के स्थान पर दायित्व संभालने वाले श्री आशीष चौहान नयी पीढ़ी के कार्यकर्ता हैं। अभी तक राष्ट्रीय महामंत्री का दायित्व संभालते हुए उन्होंने नेतृत्व क्षमता के साथ ही संगठन कुशलता का परिचय दिया है। श्री चौहान के स्थान पर महामंत्री का दयित्व ग्रहण करने वाली सुश्री निधि त्रिपाठी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में शोध-छात्रा हैं। महामंत्री चुनी जाने वाली वे पहली छात्रा कार्यकर्ता हैं। टुकड़े-टुकड़े गैंग का सशक्त प्रतिकार कर जेएनयू जैसे संस्थान में राष्ट्रवादी स्वर को बुलंद करने का काम उनके नेतृत्व में संगठन के कार्यकर्ता करते रहे हैं।

उक्त सभी परिवर्तन जिस प्रकार से अतीत में सर्वसम्मति से होते रहे हैं, वैसे ही इस बार भी हुए। पद नहीं दायित्व का भाव मत-भेद और मन-भेद के लिये अवकाश ही नहीं देता। यही कारण है ऊपर से नीचे तक सभी परिवर्तन अत्यंत सहजता से होते हैं और संगठन की यात्रा में एक नया मील-पत्थर सिद्ध होते हैं।

राष्ट्रीय अधिवेशन संगठन के लिये सिंहावलोकन का अवसर होता है। पिछले वर्ष का मूल्यांकन और आगामी वर्ष की कार्ययोजना के निर्धारण से देश भर में पूरे वर्ष चलने वाली गतिविधियों में सातत्य बना रहता है। कराकोरम से कन्याकुमारी और कच्छ से कोहिमा तक कार्यरत संगठन के कार्यकर्ताओं के लिये यह सूचनाओं और अनुभवों के आदान-प्रदान का अवसर तो है ही, पूरे भारत को जानने, समझने और उसके साथ एक अपनापन अनुभव करने का भी अवसर है। एक परिसर में लघु भारत के दर्शन और देश के युवाओं के सपनों को प्रतिध्वनित करते उदघोषों से एक उत्सव जैसे दृश्य का सृजन होता है। यह ऐसा अनुभव है जिसे देख कर ही समझा जा सकता है। उत्साह, उमंग और आकांक्षाओं से भरपूर यह वातावरण एक नये संकल्प के साथ कार्यक्षेत्र में डट जाने की प्रेरणा देता है।

परिषद के सभी प्रतिभागी कार्यकर्ता नयी ऊर्जा और नये संकल्प के साथ अपनी इकाइयों पर कार्य में जुटेंगे। उनकी गतिविधियों की सूचना अन्य इकाइयों तक पहुंचे, समय-समय पर उत्पन्न होने वाले समाकालीन मुद्दों पर तथ्यपरक जानकारी कार्यकर्ताओं के साथ साझा हो, इसके लिये राष्ट्रीय छात्रशक्ति सदैव से प्रयासरत थी। किन्तु सूचना विस्फोट के इस युग में सीमित पृष्ठों में एक माह बाद मिलने वाली जानकारी के अपना अर्थ खो देने का भय भी बना रहता था। इसके समाधान हेतु संगठन ने पत्रिका के ऑनलाइन संस्करण को इस अधिवेशन में जारी किया। यह पत्रिका जल्द ही नित्यप्रति अद्यतन होने लगेगी जिससे समाचारों का आदान-प्रदान अविलम्ब हो सकेगा और पृष्ठों की सीमा भी नहीं रहेगी। नये कलेवर में छात्रशक्ति की प्रस्तुति पर आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामना सहित,

आपका
संपादक

ब्रज में उमड़ा लघु भारत

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 65 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर एस. सुब्बैया, नवनिर्वाचित राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी व कार्यक्रम के उद्घाटनकर्ता केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण के अध्यक्ष सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री नरसिम्हा रेड्डी की उपस्थिति में दीप प्रज्जवलित कर किया गया। समारोह में अभाविप के अधिवेशन गीत का भी अनावरण हुआ। स्वागत समिति अध्यक्ष संजय अग्रवाल ने आगरा में 32 वर्ष के उपरांत हो रहे अधिवेशन में देश भर से आए प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि गुरु नानक के जन्म के 550 वर्ष के उपलक्ष्य में अधिवेशन स्थल को गुरु नानक देव नगर का नाम दिया गया। आगरा के शहीदों की स्मृति में देश के महापुरुषों से संबंधित प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया है। महामंत्री प्रतिवेदन के उपरांत केंद्रीय चुनाव अधिकारी प्रोफेसर डीके साही ने वर्ष 2019-20 के विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर हुए चुनाव का परिणाम कार्यकर्ताओं के सामने रखते हुए डॉक्टर एस. सुब्बैया को पुनः राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व राष्ट्रीय मंत्री निधि त्रिपाठी को राष्ट्रीय महामंत्री घोषित किया। इसके उपरांत नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. सुब्बैया ने लगातार तीसरी बार राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने जाने के लिए संगठन का आभार व्यक्त किया साथ ही उन्होंने कहा कि संगठन द्वारा किसी भी जिम्मेदारी को पूरी तरह निभाने का विश्वास दिलाया। राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी जी ने खुद के राष्ट्रीय महामंत्री के तौर पर निर्वाचित होने को एक सामान्य कार्यकर्ता का सम्मान बताया।

बता दें कि आगरा में आयोजित (22 -25 नवंबर, 2019) अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के इस राष्ट्रीय अधिवेशन में देश भर से 1400 से अधिक छात्र-छात्राएं, शिक्षक और संगठन कार्यकर्ता आये हुए थे। इसके अलावे मित्र राष्ट्र नेपाल के भी प्रतिनिधियों ने भी अधिवेशन में प्रतिभाग लिया। ■

देश के अधूरे सपनों को पूरा करे अभाविपः न्यायमूर्ती एल. नरसिम्हा रेड्डी

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण के चेयरमैन एवं पटना उच्च न्यायालय के सेवानिवृत मुख्य न्यायाधीश डॉक्टर नरसिम्हा रेड्डी ने कहा कि ब्रजभूमि में अधिवेशन और उनकी उपस्थिति सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि वह 1967 और 68 के राष्ट्रीय अधिवेशन में छात्र के रूप में उपस्थित हुए थे। अधिवेशन को लघु भारत और बंधुत्व का प्रतीक बताते हुए उन्होंने कहा कि देश में नकारात्मक शक्तियां सक्रिय हैं, जो देश के जवानों को अक्सर गलत कहते हुए देशहित के विपरीत कार्य करती रहती है। ऐसे सभी शक्तियों का शीघ्र ही लोप हो जाएगा, ऐसी आशा उन्होंने व्यक्त की।

स्वर्गीय दत्तोपंत ठेंगड़ी की स्मृतियों का उद्धरण करते हुए उन्होंने चरित्र पर विशेष बल देने की बात की। उन्होंने कहा कि अभाविप कार्यकर्ताओं का ज्ञान शील एकता के वाक्य के अनुरूप आचरण उनके विचारों और सपनों का प्रत्यक्षीकरण है। डॉ. रेड्डी की मानें तो प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित कर यदि आधुनिक शिक्षा के

साथ समुचित समन्वय किया गया तो भारतीय शिक्षा हेतु प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। भगवान श्रीकृष्ण और रुक्मिणी की कथा सुनाते हुए उन्होंने कहा कि समर्पण एक ऐसा हथियार और जो किसी भी व्यक्ति को लक्ष्य तक पहुंचाता है। अखंड भारत की संकल्पना पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि सात समंदर पार कर भारत आकर अगर अंग्रेज भारत पर शासन कर सकते हैं तो भारत के अखंड होने की कल्पना भी साकार हो सकते हैं।

रियासत की सियासत में बंधुओं को हिरासत में लेना इस देश की विरासत नहीं : डॉ. सुबैय्या

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर सुबैय्या ने कहा कि, "रियासत की सियासत में बंधुओं को हिरासत में लेना इस देश की विरासत नहीं"। हमारी परंपरा में पिता की आज्ञा मानकर 14 वर्ष वन में बिताने वाले राम और उनकी चरण पादुका रखकर प्रतीक्षा करने वाले भरत हैं।

उन्होंने कहा कि वामपंथी इतिहासकारों ने जो विष शिक्षा और इतिहास बोध में फैलाया है उसे विद्यार्थी परिषद दूर करके ही रहेगा। उन्होंने कहा कि माओ से प्रेरित छात्रों द्वारा जेएनयू में महिला शिक्षिका का अपमान किया गया। जेएनयू छात्र संघ अभी वामपंथी गिरफ्त में है परंतु ऐसा अधिक दिनों तक नहीं रहेगा ऐसी भी आशा उन्होंने व्यक्त की। उन्होंने अपने विचार रखते हुए कहा कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का विद्यार्थी परिषद का लक्ष्य तब पूर्णता की ओर माना जाएगा जब स्त्रियां सुरक्षित होंगी, देश के सभी मंदिरों के द्वार सभी जाति वर्ग हेतु खुले होंगे, शिक्षा सबको सुलभ होगी, भारत सुरक्षा परिषद सदस्य होने जैसे लक्ष्य हासिल कर विश्वगुरु होने की अपनी नियति को जीयेगा।

अभाविप के द्वारा पारित प्रस्ताव राम मंदिर, अनुच्छेद 370 को हटाना,राज्य विश्वविद्यालयो की शिक्षा में गुणवता, जल व वायु प्रदूषण की समस्या समाधान हेतू प्रस्ताव पारित कराए गये। उसके बाद अगले सत्र में निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने "हमारी वैचारिक यात्रा के बढ़ते कदम" पर अपने विचार रखें। अगले सत्र में "राष्ट्रीय एकात्मता "विषय पर बंसत शिंदे व श्री हरिबोरिकर जी ने प्रतिनिधियों से संवाद किया। रात्रि भोजन के उपरांत विभिन्न प्रांतो के प्रतिनिधियों नें सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

न पुरूष, न महिला बल्कि परिषद का एक कार्यकर्ता राष्ट्रीय महामंत्री बना है : निधि त्रिपाठी

आगरा में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 65 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में नवनिर्वाचित राष्ट्रीय महांमत्री निधि त्रिपाठी ने कहा कि अभाविप महिला और पुरूष मे भेद नहीं करता है,बल्कि कार्यकर्ता की क्षमता और गुणों को देखकर उसका कार्य निर्धारित करता है। उन्होंने कहा कि अभाविप राष्ट्रवादी छात्र संगठन नारों या बातों से नहीं बल्कि समाज व राष्ट्र के प्रति स्वतः स्फूर्त समर्पण भावना के कारण है। देश में विघटनकारी शक्तियां अभाविप के उपस्थिति मात्र से पीछे हट जाती हैं। त्रिपाठी ने कहा कि अनुच्छेद 370 के हटने से अभाविप के प्रत्येक कार्यकर्ता का संघर्ष और स्वप्न पूर्ण हुआ। उन्होंने राम जन्मभूमि पर आए निर्णय को राष्ट्रीय चेतना को प्रतिबंधित करता हुआ निर्णय बताया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति हेतु अभाविप ने अकथ प्रयास किए। शिक्षा नीति के मसौदे में यह स्पष्ट दिखता है कि इस दिशा में अपने सुझाव देने वाला एकमात्र विद्यार्थी संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद है। उन्होंने अभाविप के मिशन साहसी अभियान का भी जिक्र करते हुए कहा कि यह वास्तविक रूप से महिला सशक्तिकरण का प्रतिमान सिद्ध हुआ है। नारीवाद के अन्य झंडाबरदारों की तरह मात्र खोखली बातों में नहीं उलझा। उन्होंने कहा कि सदैव नवाचार द्वारा प्रासंगिक बना रहने वाला अभाविप राष्ट्रवाद

को सशक्त करने की दिशा में सदैव बढ़ता रहेगा।

राष्ट्रीय महामंत्री बनने पर निधि त्रिपाठी ने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे याद है कि मैं पंडाल के अंतिम कतार में बैठकर आपकी तरह नारे लगाती थी। यह विद्यार्थी परिषद ही है जो अंतिम कतार में बैठने वाले कार्यकर्ता को राष्ट्रीय महामंत्री बनाती है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग कह रहे हैं विद्यार्थी परिषद ने पहली बार किसी महिला को राष्ट्रीय महामंत्री बनाकर इतिहास रच दिया है। मैं उनको बताना चाहती हूं कि न पुरूष महामंत्री बना है और न महिला महामंत्री बनी है यहां तो सिर्फ एक कार्यकर्ता महामंत्री बनी है। जहां तक बात इतिहास बनाने की है तो मैं बस इतना कहना चाहूंगी कि विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता इतिहास में नहीं जीते बल्कि इतिहास बनाते हैं। ■

गुरुनानक देव जी के 550 वें प्रकाशपर्व को समर्पित सेल्फी प्वाइंट

सिखों के पहले गुरु नानक देव जी का जन्म सन् 1469 में कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को हुआ था। गुरुनानक देव जी ने समाज में मौजूद विभाजन, जात-पात, अमीर - गरीब के भेद को मिटाया। पूरा देश गुरुनानक देव जी का 550 वां प्रकाशपर्व मना रहा है। ऐसे में भला अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का अधिवेशन स्थल अछूता कैसे रहता ! आगरा कॉलेज के मैदान में अधिवेशन स्थल पर गुरु नानक देव जी को याद करने के लिए सेल्फी प्वाइंट बनाया गया था। गुरु नानक देव जी के 550 वें प्रकाश पर्व को समर्पित उनकी जीवनी पर

जानकारी देने वाली सेल्फी प्वाइंट के पास कार्यकर्ताओं ने जमकर सेल्फी ली। ■

महामंत्री प्रतिवेदन

एक देश एक विधान का देखा हुआ सपना पूरा हुआ : चौहान

उद्घाटन सत्र से ठीक पहले अभाविप के निवर्तमान महामंत्री आशीष चौहान ने महामंत्री प्रतिवेदन के द्वारा कार्यकर्ताओं के बीच में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा पूरे वर्ष भर किए गए कार्यों का उल्लेख किया। प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के पूर्व उन्होनें ब्रज भूमि को संतो की भूमि बताते हुए अधिवेशन में हिस्सा लेने आए सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया की साल 2019 देश के लिए ऐतिहासिक रहा। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा एक देश एक विधान का देखा हुआ सपना पूरा हुआ जब धारा 370 को हटा दिया गया।धारा 370 को हटाने के लिए विद्यार्थी परिषद ने 1990 से विभिन्न आंदोलनों को जन्म दिया। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं ने पूरे देश भर में विभिन्न कार्यक्रमों से अपनी खुशी का कार्यक्रम, शोभा यात्रा के माध्यमों से किया। जिसने कश्मीर चलो मार्च की याद दिलाई। अभी तक प्राप्त आंकड़े के मुताबिक इस वर्ष अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने पूरे देश में लगभग 27 लाख सदस्यता लगभग 8482 कार्यकारिणी के द्वारा की। इस वर्ष अभाविप ने अपने सेल्फी विथ कैंपस यूनिट अभियान को विशाल रूप देते हुए पूरे देश भर में 23 हजार से अधिक महाविद्यालय कार्यकारिणी का गठन किया। विद्यार्थी परिषद का अभियान मिशन साहसी पूरे देश वर्ष में सबसे चर्चित रहा, जिसमें लाखो छात्राओं ने पूरे देश के विभिन्न प्रांतों में इस अभियान में हिस्सा लिया। समाजिक ग्राम अनुभूति के द्वारा विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने गांव गांव जाकर वहां के जीवन का अनुभव लिया। वोटिंग मस्ट नेशन फर्स्ट अभियान के निमित कार्यकर्ताओं ने नुक्कड़ नाटक, रक्त यात्रा, संगोष्ठी, पत्रक उत्तरण आदि कार्यक्रम द्वारा समाज में लोगों को सौ प्रतिशत मत डालने के लिए प्रेरित किया। School Bell initiative के माध्यम से बैंगलुरु में कार्यकर्ताओं ने लगभग 94 प्राथमिक विद्यालयों की रंगाई -पुताई डिजाइन एवं आदि व्यवस्थाओं को सुधारा। इस वर्ष विद्यार्थी परिषद ने अपने छात्रा कार्य को भी बड़ी संख्या में बढ़ाया। इस वर्ष विद्यार्थी परिषद द्वारा किए गए कार्य में लगभग 30% कार्य छात्राओं द्वारा किया गया। विद्यार्थी परिषद के तीनों राष्ट्रीय कार्यक्रम स्थापना दिवस सामाजिक समरसता दिवस राष्ट्रीय युवा दिवस को भी धूमधाम से मनाया गया। मणिपुर में मणिपुर में शिक्षक दिवस को प्रतिबंधित करने के बावजूद विद्यार्थी परिषद मैं पूरे प्रदेश में लगभग 3000 शिक्षकों का सम्मान किया। विद्यार्थी परिषद ने छात्र की विभिन्न समस्याएं के लिए देशभर में समय-समय पर आंदोलन भी किया। ■

अमर बलिदानी कौशल रावत को समर्पित प्रदर्शनी

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की प्रदर्शनी ब्रज की सभ्यता, संस्कृति को अपने में समेटे देश के महापुरुषों की स्मृतियों को अपने आप में जीवंत करती दिख रही थी। यह प्रदर्शनी पुलवामा हमले में बलिदान हुए अमर बलिदानी कौशल किशोर रावत को समर्पित किया गया था। 22 नवंबर को प्रदर्शनी का उद्घाटन आगरा के महापौर नवीन जैन व अभाविप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ रमन त्रिवेदी ने संयुक्त रूप से किया। प्रदर्शनी उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए आगरा महानगर के महापौर नवीन जैन ने कहा कि पिछले 70 वर्षों से अधिक समय से छात्र हित में कार्य करने वाला अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद न सिर्फ छात्र हित की बात करता है बल्कि देश की समस्याओं पर विचार करता है और उनके समाधान के लिए आवाज उठता है। इससे पूर्व उन्होंने जलियावाला बाग प्रदर्शनी का विधिवत उद्घाटन किया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन व भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति का माल्यार्पण कर मंच पर पहुंचे महापौर जैन ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद युवाओं में संस्कार पैदा करता है। उन्हें भटकाव से बचाता है और शिक्षा क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करने को प्रेरित करता है। इतना ही नहीं, विद्यार्थी परिषद का सामाजिक कार्यों से भी गहरा नाता है। इसलिए राष्ट्रीय अधिवेशन के लिए आगरा का चयन होना गौरव की बात है।

अमर बलिदानी कौशल किशोर रावत

अमर बलिदानी कौशल किशोर रावत आगरा के कहरई गांव के रहने वाले थे। वह सीआरपीएफ में नायक (एएसआई) के पद पर तैनात थे। पुलवामा हमले के कुछ दिन पहले ही कश्मीर में 76 बटालियन में तैनाती हुई थी। इसमें ज्वाइन करने के लिए ही पहुंचे थे कि आतंकी हमला हो गया। वह उसी गाड़ी में सवार थे जिसे आतंकियों ने धमाके से उड़ा दिया। बता दें कि कौशल किशोर 1990 में सीआरपीएफ में भर्ती हुए थे। 1992 में उनकी शादी हुई। वह ज्यादातर समय श्रीनगर में तैनात रहे। कश्मीर में कई बार आतंकियों का मुकाबला किया। मुठभेड़ में अपनी टीम के साथ आतंकियों को ढेर किया था। गांव में उनकी बहादुरी के किस्से हर जुबान पर हैं। ■

कार्यकर्ताओं को 'राष्ट्रसेवा' के लिए प्रेरित करता 'जलियावाला बाग' प्रदर्शनी

आगरा कॉलेज मैदान में आयोजित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 65वें राष्ट्रीय अधिवेशन में बने 'जलियावाला बाग' प्रदर्शनी कक्ष को अमर शहीद कौशल रावत को समर्पित कर 'राष्ट्रभाव' को जगाने का प्रयास हुआ है। इसे देश के विभिन्न क्षेत्रों व प्रान्तों से राष्ट्रीय अधिवेशन में आने वाले युवा छात्र-छात्राओं को जलियावाला बाग कांड की याद दिलाकर देश के लिए कुछ कर गुजरने को तैयार करने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है। अधिवेशन के 'जलियावाला बाग' प्रदर्शनी कक्ष के माध्यम से युवाओं को न सिर्फ जलियावाला बाग कांड में हुए अत्याचार को बताने का प्रयास किया गया है बल्कि दीवारों पर मौजूद गोलियों के निशानों को भी उकेरा गया है। बॉक्स में बनाई गई गोलियों के निशान अनायास ही युवाओं को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। यहां आने वाला हर युवा सबसे पहले इस प्रदर्शनी कक्ष को देख रहा है और राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित होता दिख रहा है। ■

ब्रज के 'पारिजात' में दिखा श्रीकृष्ण का 'कर्म-कौशल विकास'

आगरा कॉलेज मैदान में आयोजित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 65वें राष्ट्रीय अधिवेशन में न सिर्फ छात्रहित की समस्याओं पर मंथन हुआ बल्कि यहां आए युवाओं को कौशल विकास का पाठ भी पढ़ाया गया अमर शहीद कौशल रावत प्रदर्शनी कक्ष के सामने वाली दीवार पर बनी पारिजात के कल्पित वृक्ष की डालियां ब्रज प्रान्त के जिलों का प्रतिनिधित्व कर रही थीं। प्रतीकात्मक पारिजात की डालियों से मथुरा स्थित कृष्ण जन्म स्थली को प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में रेखांकित कर रही थी तो चंद्रनगर के चूड़ी का व्यवसाय उद्योग बढ़ावा को प्रेरित कर रहा था। इसी तरह से हाथरस के दाऊजी महाराज का मंदिर, पीलीभीत का टाइगर रिजर्व, बदायूं का मशहूर पेड़ा रोजगार और कौशल विकास को प्रेरित कर रहा है। इसके अलावा आगरा का ताज महल प्रेम की कहानी, अलीगढ़ का मजबूत ताला व्यवसाय और एटा का पक्षी बिहार सहज, सरल सारसों की कहानियों को बयां करने वाला है। मैनपुरी की शीतल माता मंदिर और बरेली के सतनाथ के मंदिर धर्म जागरण कर आध्यात्मिक चेतना जगाने वाले हैं। ■

अधिवेशन स्थल पर लहरा रहे ध्वजों के पीछे छिपी है कहानी

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन का शुभारंभ 22 नवंबर को प्रातः 9 बजे अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय महामंत्री ने संयुक्त रूप से ध्वजारोहण कर किया। आम छात्रों को इस ध्वज के पीछे छिपी कहानी नहीं पता चलता। अधिवेशन स्थल पर लहरा रहा ध्वज अभाविप के इतिहास को दर्शाता है, अभी तक कितना राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हो चुका है इसे आप ध्वजों की गिनती कर आसानी से पता लगा सकते हैं। ध्वज स्थल पर इस बार 65 ध्वज लगे थे, 64 ध्वजों के बीचों-बीच एक अधिक ऊंचा ध्वज था जिसका आरोहण अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष व महामंत्री ने किया। यह ध्वज 65 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का प्रतीक है एवं इसके चारों ओर लहरा रहे 64 ध्वज अभी तक संपन्न हुए अधिवेशन की संख्या को दर्शा रहे थे। ध्वज स्थल पर विभिन्न रंगों द्वारा सुसज्जित रंगोली ध्वज और अधिवेशन का लोगो ध्वज स्थल की शोभा बढ़ा रही थी। गत वर्ष कर्णावती में संपन्न ध्वज स्थल पर राष्ट्रीय अध्यक्ष और महामंत्रियों के नाम भी अंकित किये गये थे, हांलाकि इस वर्ष यह देखने को नहीं मिला। ■

बापू के साथ सेल्फी

'बापू के साथ सेल्फी' शीर्षक देखकर आपको अटपटा सा लगा होगा लेकिन यह सच है। अभाविप के द्वारा राष्ट्रीय अधिवेशन में महात्मा गांधी को उनके सार्धशती पर अनोखे तरीके से याद किया गया। गांधी जी की याद में 150 लिखा हुआ जो चरखा से घिरा हुआ था, सेल्फी प्वाइंट बनाया गया था, जहां पर अधिवेशन में आये प्रतिनिधि सेल्फी ले रहे थे। बता दें कि गांधी जी के सार्धशती को देशभर में कार्यक्रम, संगोष्ठी इत्यादि के माध्यम से मनाया जा रहा है। युवाओं के संगठन कहे

जाने वाले विद्यार्थी परिषद ने युवाओं की सोच के अनुरूप सेल्फी प्वाइंट बनाकर अपने कार्यकर्ताओं में गांधी के विचारों को उकेरने की अनूठी कोशिश की। ■

सांस्कृतिक कार्यक्रमः 28 देशों के छात्रों ने दी प्रस्तुति

राष्ट्रीय अधिवेशन के दूसरे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में पढ़ने वाले 28 देश के छात्र - छात्राओं ने अपनी प्रस्तुति दी। अधिवेशन में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान ये सभी छात्र पूर्ण रूप से भारतीय परिधान में नजर आये, छात्राओं ने ओम शांति ओम का जाप किया और विश्व में शांति का संदेश दिया। वहीं इंडिया गॉट टैलेंट के टॉप फाइव में प्रतिभाग करने वाले बच्चों ने कार्यक्रम में

रोंगटे खड़े कर देने वाले प्रस्तुति दी, जिसे देखकर वहां उपस्थित सभी छात्र छात्राओं ने जमकर उनकी तारीफ की और उनके नृत्य की सराहना भी की। यह नृत्य देश की रक्षा में बलिदान हुए बलिदानियों को समर्पित किया गया था।

अधिवेशन में बृज के महारास से लेकर पंजाब और दक्षिण भारत तक की संस्कृति की झलक दिखी। कार्यक्रम में ब्रज लोक लोक कला संगम, मथुरा के द्वारा ब्रज संस्कृति पर आधारित ब्रज महारास की प्रस्तुति दी गई थी ।

इतना ही लो थाली में, व्यर्थ न जाए नाली में...

इतना ही लो थाली में, व्यर्थ न जाए नाली में.....इस पंक्ति को अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन स्थल पर बने भोजन पंडाल में लिखी गई थी और उसे परिषद कार्यकर्ताओं ने चरितार्थ कर दिखाया है। अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में जीरो फूड वेस्टेज की योजना बनाई गई थी। इसके लिए जितना भोजन ग्रहण करना है, उतना ही भोजन थाली में लेने के लिए कार्यकर्ताओं से आग्रह किया जा रहा था। खाने के बाद थाली रखने जाने के क्रम में एक - एक कार्यकर्ताओं के थाली को निहारा जाता था, जिसके थाली में भोजन होता उसे वापस लौटा दिया जाता था और भोजन खत्म कर थाली रखने के लिए बोला जाता था। भोजन व्यवस्था प्रमुख डॉ. राजेश शर्मा ने बताया कि " भोजन क्षेत्र में चार - चार कार्यकर्ता को तैनात किया गया था। वे सभी से विनम्रतापूर्वक अनुरोध करते हैं - चाहे छात्र हो या वरिष्ठ कार्यकर्ता को भी भोजन बर्बाद नहीं करना चाहिए। शर्मा ने बताया कि न केवल खाद्य अपव्यय को रोकने में मदद करने की विधि थी, बल्कि यह बर्तन धोने वाले के बोझ को भी कम कर रहा था। उन्होंने कहा, "उन्हें बचे हुए भोजन को प्लेटों से निकालने की जरूरत ही नहीं पड़ती थी चूंकि किसी के प्लेट में भोजन नहीं छोड़ने दिया गया। इसके अलावा, हमने पानी बचाने के लिए छोटे कागज़ के गिलास और स्टील के गिलास रखे थे। हमारे घरों में भी, हमें भोजन और पानी बचाने के लिए ऐसे तरीकों को अपनाना चाहिए। अधिवेशन में आये एक कार्यकर्ता जय शर्मा ने अपने अनुभव को साझा करते हुए कहा, "पहले तो मुझे बुरा लगा, क्योंकि व्यवस्था में लगे कार्यकर्ताओं ने मेरे दोस्तों के सामने मेरी थाली में बचे हुए भोजन के बारे में पूछा। लेकिन फिर मैंने इसे सकारात्मक रूप से लिया और उनके निर्देशों का पालन किया। मैंने उस चावल का सेवन किया जिसे मैं छोड़ने की योजना बना रहा था और फिर डस्टबिन में अपनी प्लेट जमा की।"

दत्तोपंथ ठेंगड़ी जन्म शती सभागार

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का मुख्य सभागार प्रख्यात विचारक भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक दत्तोपंथ बापुराव ठेगड़ी के जन्मशती को समर्पित था। दत्तोपंथ ठेगड़ी का जन्म महाराष्ट्र के वर्धा जिले में 10 नवंबर 1920 को हुआ था। एम.ए. और एल.एल.बी. की शिक्षा प्राप्त करने के बाद मात्र 22 वर्ष की अवस्था में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बनकर उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र की सेवा में अर्पित कर दिया। वे छात्र जीवन से ही विभिन्न सामाजिक एवं राष्ट्रीय गतिविधियों में बढ़ - चढ़कर भाग लेते थे। श्री ठेंगड़ी जी ने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण हेतु भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ, सामाजिक समरसता मंच तथा स्वदेशी जागरण मंच की स्थापना की। इसके साथ ही उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, सहकार भारती, अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद तथा अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत जैसे संगठनों के संस्थापक सदस्य के रूप में भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय भाव का अलख जगाने का कार्य किया। भारतीय जन जीवन की समस्याओं को समझने के लिए उन्होंने मातृभाषा मराठी के अतिरिक्त हिन्दी, बांग्ला, मलयालम, अंग्रेजी तथा गुजराती भाषा का अध्ययन किया। सन 1964 से लेकर 1976 तक राज्यसभा के सदस्य भी रहे, इस दौरान वे अनेक समितियों के अध्यक्ष व सचिव भी थे। संगठनात्मक गतिविधियों को मूर्त रूप प्रदान करने हेतु उन्होंने दक्षिण अफ्रीका, सोवियत संघ, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, कनाडा, यू.एस., चीन, तथा नेपाल जैसे अनेक देशों में प्रयास किया।

दत्तोपंथ ठेंगड़ी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे तभी तो सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों में सक्रियता के बावजूद उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी तथा मराठी में अनेक पुस्तकों का लेखन किया जिसमें एकात्म मानव दर्शन, शिक्षा में भारतीयता, डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर, लोकतंत्र तथा हमारा अधिष्ठान आदि पुस्तकें महत्वपूर्ण है। ■

अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में हुआ
'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' के वेबसाइट का लोकार्पण

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के मुखपत्र राष्ट्रीय छात्रशक्ति के वेबसाइट का विद्यार्थी परिषद के 65 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में लोकापर्ण किया गया। अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. सुबैय्या ने कहा कि छात्रशक्ति का ई-वर्जन छात्रों के लिए काफी उपयोगी साबित होगा। राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी एवं निवर्तमान संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने राष्ट्रीय छात्रशक्ति की टीम को शुभकामना दी और कहा कि आशा है कि छात्रशक्ति कार्यकर्ताओं की उपयोगिता को पूरा करेगी साथ ही शैक्षिक परिसर की आवाज बनकर उभरेगी।

बता दें कि "राष्ट्रीय छात्रशक्ति" शैक्षिक पुनर्रचना के उदात्त लक्ष्य से प्रेरित शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका है। शिक्षा जगत में होने वाली हर गतिविधि और हलचल पर इसकी नजर रहती है। वर्ष 1978 में प्रारंभ यह पत्रिका अपने स्थापना काल से ही परिसरों की समस्याओं को उठाने, विश्वविद्यालयों में चल रही रचनात्मक गतिविधियों को समाज के सामने लाने, शिक्षा संबंधी नीतियों के निर्माण के समय शिक्षा जगत के विभिन्न घटकों का पक्ष सम्बंधित पक्षों तक पहुंचाने, नयी शिक्षा नीति सहित अनेक नीतिगत निर्णयों से विद्यार्थियों को अवगत कराने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। शिक्षा से जुड़े अनेक मुद्दों पर पत्रिका ने शिक्षकों व विद्यार्थियों को अद्यतन रखने तथा परिसरों को स्पंदनयुक्त बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह की है। समय के साथ पत्रिका का भी विस्तार हुआ है। आज सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय छात्रशक्ति के पाठक हैं। बदलते तकनीक और डिजिटलीकरण के दौर में हर कोई चंद मिनटों में खबरों को जानना चाहता है। वर्तमान तकनीकी युग में तेजी से दौड़ते हुए इस समय में छात्रों को परिषद की गतिविधियों का तुरंत पता चल सके इसके लिए छात्रशक्ति के द्वारा वेबसाइट का लोकार्पण किया गया है। छात्रशक्ति के बारे में अधिक जानकारी के लिए www.chhatrashakti.in पर लॉगइन करें। इसके अलावा फेसबुक, ट्वीटर पर भी आप छात्रशक्ति को फॉलो कर सकते हैं।

लोकार्पण के मौके पर अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. सुबैय्या, महामंत्री निधि त्रिपाठी, निवर्तमान राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर, राष्ट्रीय छात्रशक्ति के संपादक आशुतोष भटनागर एवं स. संपादक अजीत कुमार सिंह मौजूद थे। ■

मनोहर सरकार विकास अपार

हरियाणा में म्हारा गांव, जगमग गांव योजना

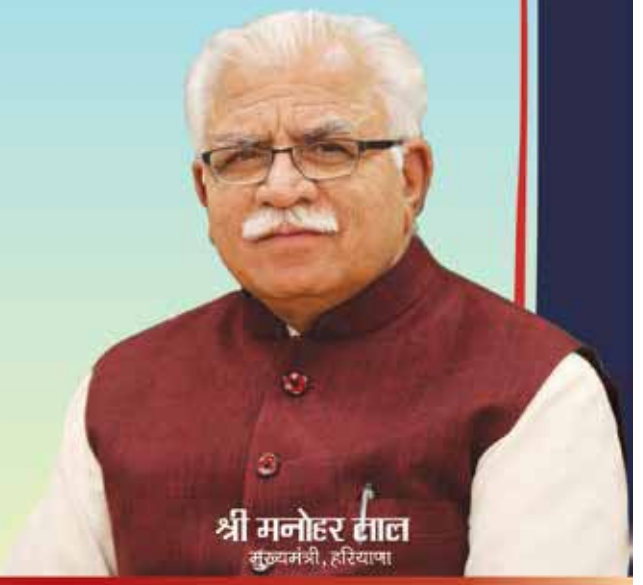

श्री मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

ग्रामीण घरेलू उपभोक्ताओं के लिए 24 घंटे बिजली आपूर्ति योजना

- न्यूनतम बिजली वितरण घाटे के फीडरों को वर्तमान 12 घंटे की बिजली सप्लाई को बढ़ाकर ➡ 15 घंटे बिजली सप्लाई
- बिजली मीटर के घर के बाहर स्थानांतरण एवं ए.बी. केबल बदलवाने पर सप्लाई 15 घंटे से बढ़ाकर ➡ 18 घंटे बिजली सप्लाई
- खराब मीटरों को बदलने तथा बिजली घाटा 20% से कम होने पर बिजली सप्लाई 18 घंटे से बढ़ाकर ➡ 21 घंटे बिजली सप्लाई
- वर्तमान बिल के साथ 5 किश्तों में अपना बकाया मूल बिजली बिल भुगतान करने पर ➡ सरचार्ज की माफी और 24 घंटे बिजली सप्लाई

4,100 से अधिक गांवों में 24 घण्टे बिजली आपूर्ति

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा
www.prharyana.gov.in

ABVP 65th National Conference, Resolution-1

Need of comprehensive reforms in State University

State universities form the base of higher education and are an important contribution of India's growth. The broad areas, regional expansion and strength of students in the state universities ensure they play a vital role in educational development of the country. State universities ensure the participation of all the communities in administration, economic and professional jobs. Ignorance of Central and State universities have led to same problems in state universities which has become an issue of concern. The standard of state universities has been effected due to lack of proper funding and this has impacted the infrastructure development, faculty recruitment and

the facilities to be provided to students. New universities by state government for political reasons but failure in allocation of funds to these universities have created a havoc situation in education system. Provisions and policies of UGC and Rusa has also contributed to these vulnerable situation of universities. Due to unavailability of proper funding system only few state universities could get funds and these universities also fail to utilize the find properly. On the other hand, Universities in distant area which are in need of funding don't get the fund. The teacher-student ratio has been constantly dropping due to long pending recruitment in State Universities. As per AISHE Report of 2018-19, in 359 State Universities 18768 positions are vacant and in 37645 affiliated colleges, 2,70,916 positions are vacant. For example, in Lucknow University, the total faculty recruitment is 409, out of which only 279 have been filled and 130 are vacant, 51% are vacant in Banglore University, 856 are vacant in Osmania University, more than 700 in 16 Universities of Odisa, around 1500 in 146 colleges of Himancal Pradesh and around 345 in Mumbai University. In state universities, the mechanism to control the number of affiliated colleges and limitation on their jurisdiction is absent. For example, Dr.Abdul Kalama Technical University, UP has 756, Dr. Ram Manohar Lohia Awadh University (UP) has 707 college, Devi Ahiliya Bai University, MP has 270 colleges, Bakartullah University, (MP) had 400, Utkal University (Odisa) has 413 colleges, Osmania University (Telengana) has 500, Mumbai University (Maharashtra) has 900, and Gulbarg University (Karnataka) has 445 affiliated colleges. Therefore, distribution of funds becomes difficult with increase in number of affiliated colleges because of which we notice

irregularities in entrance, exams and results etc. This has reduced the standard of State Universities. The condition of research in State Universities is in an alarming situation. The research lack in quality and therefore they prove non-useful. Spending is not less only in State Universities but India overall spends very less on research. As a matter of record, India spends only 0.62% in research and development, whereas in comparison Brazil spends 1.1%, China spends 2.11%, Japan spends 3.14%, USA spends 2.74%, Israel spends 4. 25% of their GDP. Looking at the condition of state Universities, this National Conference of ABVP is of the opinion that :

1. Reforms in State Universities should become priority of State Government.

2. For effective and continuous funding to state Universities, Central and State Government should formulate a scheme and implement it at the earliest. The funding through UGC and Rusa has increased and they should classify them appropriately and inclusively. As per our earlier demand, Central and State University should be equally taken care of.
3. The 65th National Conference of ABVP demands that the imposition of income tax on State Universities and GST on outsourced services should be taken back.
4. Appointment of teachers in transparent manner and on war footing, Centre and State Government should give orders. The number of students in Self-Financed courses should also be taken into consideration for sanctioning regular teaching and non-teaching positions.
5. The number of affiliated colleges in Universities should be reduced and their area of jurisdiction should be effictively regulated by rules.
6. Inclusive structure must be made with respect to scholarship and fellowship in state University and affiliated colleges.
7. Central Government must formulate a Model University Act and regulation with respect to academic quality and administrative firmness.
8. Entrepreneurship must be promoted in state universitites.
9. Central Government has recently changed the CSR guidelines by allowing contribution in R&D. In this regard, 65th National Conference of BVP demands that State Universities must take initiatives.
10. Two Improve condition of research, State Universities should open research chairs and center.
11. The academic calendar of Central and State Universities should be same.
12. All state Universities should be allocated money for library.
13. Appropriate arrangements and promotion of sports must be ensured in all State Universities.

The 65th National Conference of ABVP calls all students of State Universities to come forward for resolving these issues. ABVP will make creative efforts as well as struggle and movement for achieving them. ■

विज्ञान, पराक्रम और सेल्फी का अद्भुत संगम

आगरा में आयोजित अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में विज्ञान, पराक्रम और सेल्फी का अद्भुत संगम देखने को मिला। अधिवेशन स्थल पर मौजूद पंडाल, प्रदर्शनी से लेकर सेल्फी प्वाइंट में कुछ न कुछ कहानी छिपी हुई थी। स्थल पर मौजूद प्रत्येक चीज कार्यकर्ताओं को सीख देने के बनी हुई थी। 21 वीं सदी के युवाओं में मौजूद सेल्फी के क्रेज को देखते हुए अधिवेशन स्थल पर भी कई सेल्फी प्वाइंट बनाये गये थे, जिसके माध्यम

से सकारात्मक संदेश दिया जा रहा था। चंद्रयान 2 से लेकर पाकिस्तान के फाइटर प्लेन को मार गिराने वाले जांबाज अभिनंदन के कटआउट का सेल्फी प्वाइंट बनाया गया था। सत्र से छूटते ही कार्यकर्ताओं की हुजूम सेल्फी प्वाइंट के पास उमड़ जाती थी, अधिवेशन की यादों को अपने मोबाईल के कैमरे में कैद कर लेना चाहते थे। ■

कोई भी काम एक दिन में नहीं होता, लेकिन एक दिन जरूर होता है : सागर रेड्डी

महाराष्ट्र में जन्म लेते ही सागर रेड्डी के माता-पिता की हत्या कर दी गई थी। अनाथालय में उनका बचपन गुजरा और फुटपाथ पर उन्हें जिंदगी गुजारनी पड़ी। दर-दर की ठोकरें खाकर भी अभावों में जिंदगी के मकसद को सागर रेड्डी ने साकार किया। अनाथालय से निकला बच्चा आज इंजीनियर होने के साथ-साथ अनाथ बच्चों की सेवा की 'इंजीनियरिंग' में निपुण हो गया है। उसी को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रा. यशवंत राव केलकर युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। युवा पुरस्कार से सम्मानित सागर रेड्डी ने अपने जीवन के संघर्ष, अनाथों के लिए किये जाने वाले कार्य, आगामी योजना इत्यादि के बारे में "राष्ट्रीय छात्रशक्ति" से खुलकर बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश –

युवा पुरस्कार पाने के बाद 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से बातचीत के दौरान अपने जीवन के बारे में बताते हुए सागर रेड्डी ने कहा कि उनके मां-बाप की सिर्फ इसलिए हत्या कर दी गयी थी, क्योंकि उनकी मां दूसरी जाति की थीं और शादी से समाज खुश नहीं था। उन्होंने कहा कि जन्म लेने के बाद से 17 साल तक उनका जीवन अनाथालय में गुजरा। सत्रह बरस का होते ही अनाथालय की ओर से बता दिया गया कि 18 साल का होते ही उनके लिए अनाथालय बंद हो जाएंगे।

सागर रेड्डी कहते हैं, 'अठारह साल की उम्र होते ही मैं अनाथालय के गेट से बाहर आया और तुरंत अनाथालय का गेट बंद हो गया। अब मेरी आंखों के सामने अंधेरा था। जेब में एक रुपया भी नहीं था। मंदिरों और स्टेशन पर कई महीने गुजारे, लेकिन हार नहीं मानी। एक दिन ईश्वर की कृपा से एक शख्स ने मेरे जीवन को आगे बढ़ाने के लिए मेरा हाथ थाम लिया।'

सागर रेड्डी ने अपनी कहानी सुनाते हुए बताया कि इसके बाद मैंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की, लेकिन बच्चे और टीचर, अंग्रेजी ना आने के कारण उनका बहुत मजाक उड़ाया करते थे। बकौल सागर इंजीनियरिंग कक्षा में लड़के-लड़कियां उनका मजाक उड़ाती थीं, हर परिस्थिति में सागर रेड्डी ने कुछ कर गुजरने की ठानी थी। लिहाजा उन्होंने कड़ी मेहनत के दम पर अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की। इंजीनियर बनने

के बाद सागर का जीवन आसान हो गया लेकिन अपना अनाथालय देखने की ख्वाहिश ने उनका जीवन ही बदल डाला।

आत्महत्या करना चाहते थे सागर

इंजीनियर रेड्डी कहते हैं कि अनाथालय से निकलने के बाद मेरी जेब में एक धेला भी नहीं था। कहां जाऊं, क्या खाऊं, कहां रहूं जैसे सवालों का कोई जवाब नहीं था। रात रात भर जागने वाले सागर रेड्डी कहते हैं कि कई बार मेरे मन में भी आत्महत्या का विचार आया था, लेकिन हर बार दृढ़ निश्चय और कुछ करने की इच्छा शक्ति की सोच लेकर जीता रहा।

अनाथालय पहुंचे तो लिया ये संकल्प

सागर रेड्डी जब अनाथालय पहुंचे तो वहां पल रहे बच्चों को देखकर उन्हें रोना आ गया। उन्होंने कहा कि मैं यही सोचने लगा कि जब ये बच्चे 18 साल के हो जाएंगे तो अनाथालय से निकाले जाएंगे। फिर इनके जीवन का क्या होगा। यहीं से सागर रेड्डी ने अपने बड़े मिशन की रचना की। रेड्डी ने संस्था के जरिये अनाथ बच्चों के सपने को साकार करने का प्रण किया। सागर कहते हैं कि अब तक उन्होंने हजारों अनाथ बच्चों को इस लायक बनाया कि वह समाज में अच्छे-अच्छे मुकाम पर पहुंच गए हैं।

एकता निराधार संघ के हैं संस्थापक

सागर रेड्डी 18 साल से अधिक उम्र के अनाथ बच्चों के लिए काम करते हैं। सागर रेड्डी अब तक 1,125 बच्चों को आत्मनिर्भर और 700 से अधिक बच्चों को नौकरी के योग्य बना चुके हैं। इतना ही नहीं सागर रेड्डी 60 से अधिक अनाथ युवतियों का कन्यादान भी कर चुके हैं। छह से भी अधिक राज्यों में सागर रेड्डी की संस्था एकता निराधार संघ काम कर रही है।

कौन हैं सागर रेड्डी

दुश्वारियों के बीच जीने की राह कैसे तलाशी जाती है, इसका अगर कोई उदाहरण है तो वह हैं महाराष्ट्र के सामाजिक कार्यकर्ता सागर रेड्डी। एक साल की उम्र में सागर रेड्डी की माता-पिता की हत्या कर दी गई थी। सागर की जिंदगी में तमाम बाधाएं आईं, जिनका उन्होंने डटकर मुकाबला किया और नई राह बनाई। सागर रेड्डी की जीवन गाथा अकथ तो है ही, साथ में किसी फिल्म से कम भी नहीं है। ■

ख़बर

स्वामी विवेकानंद के प्रतिमा से हुए छेड़छाड़ के खिलाफ देशभर में विरोध प्रदर्शन

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), दिल्ली में लगी विवेकानंद जी की प्रतिमा के चबुतरा पर आपत्तिजनक शब्द लिखे जाने एवं प्रतिमा के साथ हुए छेड़छाड़ खिलाफ देश भर में विरोध प्रदर्शन किया गया। अभाविप जेएनयू इकाई अध्यक्ष दुर्गेश कुमार तथा सचिव मनीष जांगिड़ ने संयुक्त बयान में कहा कि जेएनयू का आम छात्र अपने अधिकारों के लिए जब संघर्षरत है, ठीक उसी समय लेफ्ट अपने फ्लॉप हो चुके एजेंडे को पुनर्जीवित करने का असफल प्रयास कर रहा है। उन्होंने वामपंथी छात्र संगठनो की गतिविधि पर सवाल करते हुए कहा कि जिस प्रकार से पूरे विश्वविद्यालय की सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाया गया क्या वह सही है? स्वामी विवेकानंद युवाओं के आदर्श हैं, उनकी प्रतिमा के साथ छेड़छाड़ किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की सकती। हांलाकि अभाविप जेएनयू इकाई एवं प्रशासन द्वारा प्रतिमा के आसपास सफाई कर दी गई है। हमलोगों ने स्वामी विवेकानंद के सम्मान में प्रतिमा के आसपास दीये भी जलाये। वहीं अभाविप दिल्ली प्रांत मंत्री सिद्धार्थ यादव ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने आधुनिक भारत को दिशा दिखाने के लिए अहम योगदान दिया और उन्हें राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए। जेएनयू शिक्षक संघ ने भी विवेकानंद की प्रतिमा को क्षति पहुंचाने की घटना की निंदा की। संघ ने कहा, ''इस तरफ के हो या उस तरफ के, जो भी इसके लिए जिम्मेदार हैं वे निश्चित तौर पर अधिनायकवादी प्रशासन और उसके अन्यायपूर्ण कार्रवाई के खिलाफ संघर्ष के मित्र नहीं है और वे जेएनयू की लोकतांत्रिक नैतिकता जिस पर गर्व करते हैं,उस का प्रतिनिधित्व नहीं करते।''

गौरतलब है कि पिछले महीने दिल्ली स्थित जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में लगी विवेकानंद की प्रतिमा के चबूतरे पर आपत्तिजनक संदेश लिखे हुए मिले। इस प्रतिमा का अनावरण अभी होना बाकी है। भगवा रंग के कपड़े में ढकी यह मूर्ति जेएनयू के प्रशासनिक भवन के सामने लगी है। ■

हमारी वैचारिक यात्रा के बढ़ते कदम: आशीष चौहान

19 48 से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की अविरल प्रवाह आज अपने इस पड़ाव पर पहुंचा है, जहां 65वां राष्ट्रीय अधिवेशन, 71वां वर्ष, 26 राष्ट्रीय अध्यक्ष, 30 महामंत्रियों, लाखों कार्यकर्ता, हजारों पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं ने अपने जीवन का बहुमूल्य समय देकर सींचा और शिक्षा क्षेत्र ही नहीं अपितु समाज क्षेत्र के प्रत्येक भाग हेतु करोड़ों विद्यार्थियों, युवाओं को राह देने का कार्य अभाविप ने किया। जिस प्रकार भागीरथी के अवतरण की भी एक पूर्व गाथा है वैसे ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की विचार यात्रा की भी एक पूर्व पीठिका है।

1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की घोषणा डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने विजयादशमी के दिन की। उसी संघ रूपी हिमखंड के रिसते रस से ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की धारा का प्रस्फुटन हुआ है। विद्यार्थी परिषद हिमखंडों के समीप से ही निकली आजादी के बाद नए आशाओं के कुंड की तरह है। हमें देखने वालों को हम हिमखंड से कुछ अलग भी प्रतीत हुए परंतु मेरा मानना है कि हम सभी इसी हिमखंड के पदार्थ हैं जिसे हम कार्यकर्ता संघ विचार कहते हैं। अभाविप भी रा. स्व. संघ से प्रेरित है। छात्र संगठन के रूप में 9 जुलाई को अभाविप की स्थापना दिल्ली में हुई। 1948 में ही हमने काम करना शुरू कर दिया था। जब हमने काम करना शुरू किया तो चर्चा हुई कि हम क्यों काम करेंगे, इस पर विचार विमर्श और चर्चा के उपरांत यह तय हुआ कि हम राष्ट्रीय परिदृश्य पर काम करेंगे, राष्ट्रीय पुनर्निर्माण हमारा लक्ष्य होगा। परिषद के कार्यक्रम का स्वरूप क्या हो, इस पर तय हुआ कि हमारा स्वरूप रचनात्मक होगा। कार्यकर्ताओं को राष्ट्रभक्ति के लिए प्रेरित करना, समाज जीवन के लिए प्रेरित करना हमारा कार्य होगा। अभाविप शैक्षिक परिवार के रूप में कार्य करती है जिसमें शिक्षाविद, शिक्षक छात्र आदि होते हैं। विद्यार्थी परिषद ने जब कहा कि हम दलगत राजनीति से ऊपर उठकर काम करेंगे तो विषय आया कि यह कैसे संभव होगा? 1970 में तय करके विद्यार्थी परिषद ने छात्रसंघ में भाग लिया।

छात्रसंघ चुनावों में विद्यार्थी परिषद की भारी जीत हुई, चूंकि परिषद एक विचारधारा पर आधारित छात्र संगठन है। 1975-77 के बीच जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में संपूर्ण क्रांति में भाग लिया। आपातकाल के बाद चुनाव हुए जनता पार्टी की सरकार बनी। जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद चर्चा हुई कि जिन छात्र संगठन, युवाओं ने आंदोलन में भाग लिया उसकी भी सहभागिता हो। उनलोगों का मत था कि अब अलग से संगठन चलाने कि क्या जरूरत है? आप भी सत्ता का भागीदार बनिये लेकिन विद्यार्थी परिषद ने सत्ता का भागीदार बनने से इनकार कर दिया। 1978 – 82 तक अभाविप ने छात्रसंघ से दूरी बना ली लेकिन राष्ट्रीय विषयों पर हमेशा टिप्पणी करते रहे। साठ के दशक में हमने कहा कि छात्र कल का नहीं अपितु आज का नागरिक है। मत देने का अधिकार 18 वर्ष हो, जिसे बाद में सरकार ने माना और मत देने का अधिकार 18 वर्ष किया गया। 1973 में विद्यार्थी परिषद ने छात्रों के सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्व पर प्रस्ताव पारित किया। उसी समय गुजरात के छात्रावास में मेस अनियमतता को खिलाफ आंदोलन शुरू हुआ जो संपूर्ण क्रांति में बदल गया। 1977 में जेपी ने कहा था कि जेपी मूवमेंट से संघ और विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं को हटा दें तो कोई आंदोलन ही नहीं था, कोई व्यक्ति नहीं था। आजादी के बाद विद्यार्थी परिषद ने कहा कि हम आजाद जरूर हुए हैं लेकिन कार्य नहीं हुआ है। विद्यार्थी

परिषद ने इन कार्यों को पूरा करने के लिए अपने आयाम, प्रकल्प और अन्य कार्यों को खड़ा किया। उसी संकल्पना के साथ 1967 – 68 के समय हमने विदेशी छात्रों का सम्मान किया। 1978 में ग्रामोथान विद्यार्थी के साथ काम शुरू हुआ। अलग अलग संस्थानों में काम खड़ा किया। पूर्व में अभाविप में पूर्णकालिक रही गीता ताई कहती हैं कि 1967 में मुंबई इकाई में कोन्वोशन के मेले लगते थे लोग एक – दो रूपये की टिकट लेकर देखने आते थे। परिषद ने अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये आज अधिकांश निजी विद्यालय, डीम्ड यूनिवर्सिटी परिषद के इन कार्यों को फॉलो कर रहे हैं। हमारे किये गये कार्यों का समाज ने अनुकरण किया। इस तरह के प्रयोग करते – करते विद्यार्थी परिषद की पहचान एक सामाजिक संगठन के रूप में बन गई। 1966 में प्रा. यशवंत राव केलकर को पी. वी. आचार्य ने ट्रंक कॉल करके कहा कि तीन दिन के लिए पूर्वोत्तर के कुछ छात्रों को लेकर आ रहे हैं। इसी तरह अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन (सील) यात्रा की शुरूआत हुई। 1985 में महाराष्ट्र के अंदर इंजनियरिंग के छात्रों के लिए डीपेक्स की शुरूआत हुई। इसी प्रकार अन्य राज्यों मे सृष्टि, फार्माविजन के कार्यो की शुरूआत हुई। जैसे – जैसे समय बितता गया आयाम खड़े होते चले गये। आज भले ही कई आयाम बन चुके हैं लेकिन इसकी नींव शुरूआती दिनों में ही अभाविप ने रख दी थी।1986 में हमने 28 दिन की नर्मदा यात्रा शुरू किया, नर्मदा के जल को संग्रह कर उसे लैब में टेस्ट कर एनजीटी में दिया। बाद में नर्मदा को बचाने के लिए हमने केस फाइल किया, चर्चा के दौरान पता चला कि विद्यार्थी परिषद 1960-70 में भी इस पर कार्य कर चुकी है।

विभिन्न पड़ावों को पार करती देश के सुदूर क्षेत्रों में भी अभाविप की नगर इकाई, महाविद्यालय व +2 विद्यालय में शाखा है। हम आज एक कार्यक्रम की अपील करते हैं तो बोम्डिला की बर्फवारी में विजय जुलूस तो अंडमान – निकोबार में छात्रों का प्रदर्शन होता है। मणिपुर में टेक्नोपॉल से सेल्फी खींची जाती है और कच्छ और जैसलमेर रेतीले क्षेत्रों में सामाजिक अनुभूति के लिए विद्यार्थी जाते हैं। अलग – अलग कालखंड में विभिन्न परिस्थितियों, भिन्न – भिन्न, परिवेश में विचारों की कई मार्गों में से मौलिक तत्व लेते हुए अभाविप शिक्षा क्षेत्र की विभिन्न विचार यात्राओं में अलख जगाई है जिससे जानने के लिए देश की युवाशक्ति को ना 50 के दशक में ना आज भी कोई मुश्किल होती है। 2007 में बैंगलुरू में विद्यार्थी परिषद ने एक कार्यक्रम किया जिसमें अतिथि के तौर पर श्री श्री रविशंकर जी आये थे। कार्यक्रम की सफलता को देखकर उन्होंने कहा था कि यह कार्यक्रम यहीं पर खत्म नहीं होनी चाहिए, विद्यार्थी परिषद को आगे ले जाना होगा और हमने थिंक इंडिया के माध्यम से कार्य करना शुरू किया। थिंक इंडिया ने विधि, नीति, संसदीय जैसे कई इंटर्नशिप प्रोग्राम चलाये हैं। 1985 में वसुधैव कुटम्बकम की भावना लिये WOSY की शुरूआत की, इसके माध्यम से आज पूरा विश्व एक मंच पर आकर एक दूसरे के देशों की संस्कृति को साझा कर रहे हैं।

विद्यार्थी परिषद ने जब कहा कि हम दलगत राजनीति से ऊपर उठकर काम करेंगे तो विषय आया कि यह कैसे संभव होगा? 1970 में तय करके विद्यार्थी परिषद ने छात्रसंघ में भाग लिया। छात्रसंघ चुनावों में विद्यार्थी परिषद की भारी जीत हुई, चूंकि परिषद एक विचारधारा पर आधारित छात्र संगठन है। 1975-77 के बीच जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में संपूर्ण क्रांति में भाग लिया। आपातकाल के बाद चुनाव हुए जनता पार्टी की सरकार बनी। जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद चर्चा हुई कि जिन छात्र संगठन, युवाओं ने आंदोलन में भाग लिया उसकी भी सहभागिता हो। उनलोगों का मत था कि अब अलग से संगठन चलाने कि क्या जरूरत है? आप भी सत्ता का भागीदार बनिये लेकिन विद्यार्थी परिषद ने सत्ता का भागीदार बनने से इनकार कर दिया।

बदलते दौर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने भी अलग – अलग कार्य और आयाम खड़े किये। आज देखने की आवश्कता है कि कौन से ऐसे आईडिया है जो आगे भी चलेगें। कर्नाटक में प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति को सुधारने के लिए स्कूल बेल नाम का इन्सएंटिव चलाया जा रहा है, इसे देश के अन्य भागों में ले जाने की जरूरत है। राष्ट्रीय कला मंच के माध्यम से हम कला को आगे बढ़ाएगें। आयामों के माध्यम से उत्तरोत्तर विकास हुआ है। आने वाले समय में और भी कई प्रश्न खड़े होंगे हमें इसका उत्तर भी ढूंढकर समाधान देना होगा। आयाम – कार्य और गतिविधि पर विशेष जोर देना होगा। समाज में बंधुता, राष्ट्र की एकात्मता-अखंडता को अक्षुण्ण रखने की प्रतिबद्धता बढ़ाने के लिए हमें समर्पित होना पड़ेगा। ■

THE CONCEPT OF DEVELOPMENT

There is a general misconception that the concept of 'Development is a recent one. and that this phenomenon was initiated only after the end of the second world-war. True , the first most renowned advocate of the idea of 'progress", which was synonymous with development' was one French Philosopher Condorcet. (1743-94) But, in fact the idea of development is as old as the process of human thinking. what Darwin traced through his theory was the process of development right from the beginning of life on this planet.

Take the case of European history. What were Socrates, Plato and Aristotle aiming at, dring the earliest period of Greek city states? Efforts for development were never discontinued through out the historical period, though the nature of efforts differed from time to time and country to country, according to the differing demands of the situations. Have a cursory glance at the entire canvass, from ancient Greece through ancient Rome. the middle ages, Italian Renaissance, German reformation. geographical discoveries and overseas expansion , rise of nation states in Western Europe, Scientific revolution and enlightenment, age of democratic revolutions and post revolutionary Europe, to the post 1945 Europe. During every period we come across great humanitarian thinkers whose sole object of life was "Development" - though this specific term was not in vogue. Then what inspired the founders of various religions and " Ism's"?. Cheguevara and friar have spelt out the motivation behind all revolutions-right from the Roman Revolution of 509 BC to modern coups. Original motivation of the revolutionaries was the same. With the same object in view, the advocates of democracy launched constitutional struggles in the different European countries. A surprising fact is that though monarchs in general were self-centred and anti-people. some of them took great pains to ensure that their subjects benefited by the process which we now term as 'Development". These enlightened despots were Peter the Great, Frederick the Great an Charles the Great (Charlesmagne).

In Brief the term development might have gained or given currency after June 1945, but the under lying idea is as old as life itself.

The difficulty with western thinking is that it is always compartmentalized, fragmentary. Ours is always integrated, holistic. They feel that solutions to economic problems can be found through the study of economics, to political problems through the study of political science and so on. This is lopsided thinking. Without taking simultaneously into consideration the various non-economic factors, it is impossible to have correct diagnoses of an economic malady and to think of the appropriate remedial measures. This holds good about all other fields- whether political of social or cultural. The importance of non-economic factors in the consideration of economic problems cannot be minimized. For example, L.T. Hobhouse has the following remarks about. "Social factor".

Take away the whole social factor and we have got Robinson Crouse, with his salvage from wreck and his acquired knowledge, but the naked salvage living on roots, berries and vermin'. while considering human welfare, the non - economic materialistic factors cannot be ignored. For example geographical position of this country, It's climate, rivers, mountains, natural harbours, peace and security or natural resources of the country such as land, water, forest, mineral resources, agricultural potentialities, (general development in other countries), ete.,

Thus non-economic materialistic factors not amenable t money measurement have also a role to play in this respect.

But that is not all. in his 'open secret of economic growth (1957) David Macrod Wright observed:

"The fundamental factors making for economic growth are non-economic and non materialistic in character. It is the spirit itself that builds the body".

It is necessary to take into consideration the drastic differences between the two approaches, the Western and the Hindu.

WESTERN	HINDU
compartmentalized thinking	Integrated thinking
Man - a mere material being	Man-a physical, mental intellectual-spiritual being
Subervience to Artha-Kama	Drive towards Purushartha chathushtayam
Society , a club if self-centred individuals	Society , a body with all individuals individuals therein as its limbs.
Happiness for oneself	Happiness for all
Acquisitiveness	'Aparigraha' (Non-possession)
Profit-motive	Service motive
Consumerism	Restrained consumption
Exploitation	'Antyodaya'
Right-Oriented consciousness of others duties	Duty-oriented consciousness of others rights
Contrived scarcities	Abundance of production
* Monopoly capitalism through various device	Free competition without manipulated markets
Economics theories centred round wage-employment	Economic theories centred round self employment
An Ever-increasing army of the proletariat	The ever increasing sector of Vishva Karma (Self- Employment)
The rape of Nature	The milking of Mother Nature
Constant conflict between individuals, the society and the nature	The complete harmony between an individuals society and nature.

* For example, agents, brands, copyrights, trade names, licences, quotas, protective tariff, cartels, pools. trusts, holding companies, or intercorporate boards of directors, intercorporate investments. etc.,

These are entirely different paradigms. Every society is free to choose its own mod on 'Take all, or Leave all' basis.

The United nations took cognisance of this problem first in tis 1951 repost dealing with problems of development of the under development countries. It was a major landmark in this respect Dr.D.R.Gadgil was associated with the preparation of that UN reports/

Dr. Gadgil had correct perception of the problem, Unfortunately, the Western thinking on the subject became wayward, and Pandit Nehru, as ususal. came under the influence of the West. Dr.Gadgil Could not persuade

Pt.Nehru to his line of thinking which was of the earth, earthly.

Devlopment Economics has appropriated many concepts from "Growth Theories" Unfortunately, Our economists are blindly following the western patterns. They are capable of working out growth theories suited to our conditions. But they stubbornly refuse to conduct self-thinking. They are so enamoured of western theorists that if they get disillusioned by one theory, they will, instead of using they can catch hold of. They may accept that Marx as well as Adam Smith ,J.S.Mill, Richards and Marthus have become outdated They may be sceptic about the relevance of Alfred Marshall, Wicksell, Gunner Myrdal and Keynes, to the present day conditions. But they will feel homely with the five stages of Economics Growth enumerated by Prof.Rastow and get busy in discussing whether we have reached his third take off stage' so as to pass over to his fourth 'Dirve to Maturity ', leading to the stage of high mass consumtion.

We are following western models of growth, while Westerners themselves are progressively realising their futility. For example the last year's UN Report on Human Development frankly states that what they have achieved so far was jobless growth', 'ruthless growth, violent (peaceless) growth' and 'futureless growth'.

But immediately after the Report was published, the chairman of the U.N.D.P under whose guidance the Report was prepared was asked to quit his post, and the Report published this year does not touch this subject with a pair of ton.

Their object is material prosperity of a few, not happiness for all profit-maximization of fewer persons. Naturally, their parameters are purely materialistic G.D.P., G.N.P, national wealth, national income, per caita income, balance of payment position etc.

they are least concerned about problem like inflation or unemployment.

Is this purely materialistic concept adequate? Can it ensure happiness for even the few who are its clients? Happiness of an individuals includes happiness at all levels, physical, mental , intellectual and spiritual. Material Prosperity may lead to physical happiness- though this is also doubtful. The mental the intellectual, the spiritual are beyond its jurisdiction. So ,''development ''for what material prosperity of a few at the cost of 80% people in the world. Even Form purely materialistic pint of view, this term has become fraudulent after the arrangement of GATT negations, like hegemonism parading under the banner of globalisation.

In the first phase, why this lopsided concept has been accepts of human happiness are not amenable measurement by monetary standards. This putting the cart before the house. They indices that are being used in the context o material prosperity may not be useful in this context but there ca be different methodology and it was developed, scientifically in our country by thinkers led by Patanjali. We had a balanced and comprehensive view of human development leading to perfect human happiness.

Material prosperity (samutkarasha) coupled with spiritual elevation (nisreyas), both being the two facets of the same coin, together were termed as prabhav by Maharhi Vyasa who declared,

Prabhavarthahi bhootanam Dharma pravachanam kritam Yat syat prabhav samyukthah sa dhrama ithi nischayaha

'for the material and spiritual progess of the beings, dharma was narrated. what is accompanied by the material and spiritual progress, that indeed in Dharma.

This subject has been dealt with at length by different thinkers at different forums. Here suffice it to say that our methodology has been tried and tested and found to be perfect after the experience of centuries. Therefore, the lame excuse that whatever is not amenable to money measurement should not be included in the definition of 'development' is not tenable.

Coming to brass tacks, the term development' is being today used by global conspirators to promote their nefarious designs. This fraud has been conclusively exposed from the forum

of Swadeshi jagran manch. Therefore, without going into the dtails, let us find out what type of impact 'development' can have on the concerned countries.

Every culture has its own model. The model of development brought over from another cultural setting, or imposed by alien vested interests, can be disastrous, Ivan Illich, the famous author of "Towards a history of needs'. 'Medical nemeses'. 'Tools for conviviality' and De-schooing Society'. narrates his Mexican experience of "the development myth ". He looks at what development has meant to Mexico, not from the summit where plans of development are prepared, and where implementation is reviewed , not from the statistic and theoretical indices that the bureaucracy and the technicians offer as evidence of "development" but the impact it has had on the life of the poor in the rural areas and slums erosion of means from traditional environments skills, loss of self-reliance and dignity and solidarity of communities, spoliation of nature, displacement from traditional environment unemployment, bull-dozing of nature, displacement from traditional self-reliant communities into the economy, cultural rootlessness, and corruption in politics.

He ask whether this development. This is the price that is being paid for a blue print of development that has no relation to the condition and goals of the communities that are described as the beneficiaries of development.

Sarcastically, her observes:

"Development is an oozy term that is currently used for housing projects, for the logical sequence of though, for the awakening of child's mind or the building of a teeager's breasts. But "development always connotes at least one thing: a person's ability to escape from a vague, unspeakable, undignified condition called 'subdesarollo' or under development, invented by harry Truman on 10 January , 1949.

Seldom has a term been accepted all around the world, like this word. on the day it was coined. It became a term to spawn irrepressible bureaucracies".

And again, "Development means to have started on a road that others know better, to be on the way towards a goal that others have reached, to race up a one-way street. Development means the sacrifice of environments. solidarities, traditional interpretations and customs, to ever changing expert-advice. Development promises enrichment; and for the overwhelming majority, has always meant the progressive modernization of their poverty".

In conclusion Ivan Illich says, "The time has come to recognize development itself as the malignant myth whose pursuit threatens those among whom I live in Mexico. The "crisis" in Mexico enables us to dismantle development as a goal."

That his remarks were prophetic has been proved by subsequent events.

'The challenges to the South' document prepared under the guidance of Dr.Manmohan Singh, who suffered from amnesia immediately afterwards, the report of the committee appointed by European community on the impact of latest technology on the unemployment problem, the rebuff given by China and Japan to certain U.S. moves, agitation of German workers against the 'Social clause' , revolt of the French peasants demanding that their government should withraw its signature from the agreement with USA, resentment of North American countries against NAFTA, armed rising of Mexican peasants against it, the rout in Canadian elections of a ruling party that has signed the agreement, and a letter by the newly elected prime minister to president Clinton that Canada demands renegotiation on the same agreement, the warnings Mr.Nadir, the head of the U.S consumer movement and the U.S labour leaders; the resolution The other Economic Summit', Conference held at Denver on June 20-21, and the resolutions passed by the G15 Conference held at Kualaumpura on Nov. 3-4, 1997, under the able guidance of Malaysian Prime minister Mehathir Mohammed, all these vindicate the stand taken by lllich on the concept of development. ■

छात्र शक्ति ने पूरी दुनिया में खुद का लोहा मनवाया: योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने युवाओं से युवा शक्ति को हतोत्साहित करने वालों को चिह्नित करने का आह्वान किया। कहा कि ऐसे लोगों के खिलाफ रणनीति तैयार करें। देश की कीमत पर समझौता नहीं किया जाएगा। मुख्यमंत्री अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 65वें राष्ट्रीय अधिवेशन में अंतिम दिन 25 दिसंबर को आगरा कॉलेज मैदान पर प्राध्यापक यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार सम्मान समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

मंच से बोलते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ब्रज की धरा यानी भगवान श्रीराम, कृष्ण और शंकर की महिमा से उद्बोधन शुरू किया। उद्बोधन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि ब्रज क्षेत्र उत्तर प्रदेश में आता है। यह गौरव की बात है। लोहिया प्रखर समाजवादी थे। किसी उपासना में विश्वास नहीं था। वे आंदोलन की आजादी से जुड़े रहे। भारत की एक आत्मा का आधार राम कृष्ण और शंकर हैं। यह बात लोहिया ने कही थी। उत्तर प्रदेश में राम कृष्ण भगवान विश्वनाथ की धरती है। लघु भारत का दर्शन यहां देखने को मिलता है। अरुणाचल से द्वारिका तक लगभग 3500 किलोमीटर का क्षेत्र कृष्ण की लीलाओं से जीवंत प्रदर्शित करता है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि केदारनाथ के द्वादश ज्योतिर्लिंग भगवान शिव का बोध करते हैं। जो स्वयं जीता है और हजारों लोगों को जीवन जीने की भी प्रेरणा देता है। रेंगना जीवन नहीं है। कोई मूल ऐसा नहीं जिसमें औषधीय गुण नहीं हो। वहीं कोई पुरुष ऐसा नहीं जो अयोग्य हो। एक योजक हर किसी की योग्यता को प्रमाणित करता है। यह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यह भी कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने छात्रों की शक्ति को राष्ट्र शक्ति बनाया है। छात्र विघटनकारी है। तोड़फोड़ करता है। यह माना जाता था लेकिन अभाविप ने कहा कि छात्र शक्ति ही राष्ट्र शक्ति है। छात्र शक्ति ने पूरी दुनिया में खुद का लोहा मनवाया है। लेकिन कुछ लोग भारत की ऊर्जा को हतोत्साहित करना चाहते हैं। उनका चिह्नीकरण होगा उसके बाद रणनीति तय होगी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारत विश्व में बड़ा देश है। इसका अहसास कराने की जरूरत नहीं है। उन्होंने एक कहानी का उदाहरण दिया। जंगल में शेर का बच्चा कुनबे से बिछड़ गया और लोमड़ी के साथ चला गया। अचानक शेर के झुंड ने लोमड़ी के झुंड पर हमला किया तो देखा कि हमारी बिरादरी का है और उसे साथ ले गया। लेकिन वह लोमड़ी की तरह व्यवहार करने लगा। उसको फिर शेर की ताकत का एहसास कराया गया ऐसा भाव हर भारतवासी के मन में पैदा करने की जरूरत है।

जो लोग हमें कमजोर करना चाहते हैं उन्होंने जाति, क्षेत्र, धर्म और मजहब का सहारा लिया। वे कहते थे धारा 370 हट जाएगी लेकिन उनसे एक पत्ता तक नहीं हिला। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने कश्मीर की धारा 370 को खत्म करने का प्रयास किया। अमित शाह और मोदी ने धारा 370 को हटाया। दोनों को महापुरुष मानते हुए नमन करता हूं। अयोध्या का मसला बेकार में 500 वर्षों से चला आ रहा था। मामला जिसको सुप्रीम कोर्ट ने 45 मिनट में खत्म कर दिया। यह न्यायपालिका की ताकत है। इस पर जो कहते थे कि खून की नदियां बहेगी, एक मच्छर भी नहीं मरा। यह देश के लोकतंत्र न्यायपालिका की ताकत है। भारत देश और दुनिया के समक्ष शांति का संदेश देने में सक्षम है। लेकिन दुश्मन देश की सीमा पर हमला करेगा तो उसका मुंहतोड़ जवाब देने में भी भारत सक्षम है।

भारत सीमा सुरक्षा अंतरिक रणनीति में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद सक्षम कैंपस तक सीमित नहीं है। हम उत्तर प्रदेश में 18 विद्यालय ऐसे बना रहे हैं जिसमें आवासीय श्रमिकों के बच्चों को पढ़ाएंगे। इसके बाद भी शिक्षा देंगे और उसके बाद उसी के आधार पर उसे आगे बढ़ाएंगे। 18 आवासीय विद्यालय बनेंगे। रामकृष्ण और शंकर की धरती पर अब कोई अनाथ नहीं होगा। हर कोई बन सकता सागर रेड्डीः एक साल की उम्र में अनाथ हुए सागर रेड्डी मुंबई में 18 साल से अधिक उम्र के अनाथ बच्चों के लिए काम कर रहे हैं। उन्हें प्राध्यापक यशवंतराव

केलकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। योगी ने कहा कि हर कोई सागर रेड्डी बन सकता है, बस यही सोच कर काम करना है।

यशवंतराव केलकर पुरस्कार से सम्मानित इंजीनियर सागर रेड्डी, मुंबई ने एक अनाथ होने के दर्द को बयां किया। उन्होंने कहा कि कहा कि विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा दिया जाने वाला प्रतिष्ठित प्रा. यशवंत राव केलकर पुरस्कार को पाने के बाद मेरी जिम्मेवारी दोगुनी बढ़ गई है।

विद्यार्थी परिषद की कार्यपद्धति और प्रा. केलकर जी के जीवन को अलग नहीं किया जा सकता : खंडेलवाल

प्रा. यशवंतराव केलकर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री विक्रांत खंडेलवाल ने कहा कि मैं उन सौभाग्यशाली लोगों में से नहीं हूं जिन्होंने डॉ. यशवंतराव केलकर जी का प्रत्यक्ष सानिध्य पाया हो। मैंने जितना उनके बारे में सुना है, जाना और पढ़ा है उसके हिसाब से मा. मदनदास जी, स्व. बाल आप्टे व अन्य शिक्षक कार्यकर्ताओं में मैं यशवंतराव जी का दर्शन पाता हूं। आज से तीस साल पहले मैंने 'एक कार्यकर्ता' नामक किताब पढ़ा जिसमें आवरण पृष्ठ के पीछे एक कविता लिखा हुआ था - एक भूट्टा मोतियों के दानों से लबालब भरा हुआ, हवा के साथ हिलोरता है सोने की तरह चमकते हुए उस भुट्टे के पीछे लिए पसीनों के सैंकडों मोती होता है। प्रा. यशवंतराव केलकर जी के जीवन से हम जैसे अनेक कार्यकर्ता प्रेरणा पाते हैं। विद्यार्थी परिषद की कार्यपद्धति और प्रा. केलकर जी का जीवन अलग नहीं किया जा सकता है। उनके जीवन में पूर्व योजना और पूर्ण योजना साफ परिलक्षित होता है। ऐसे महान प्रा. केलकर जी की स्मृति में यह पुरस्कार दिया जाता है। इस मौके पर राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय महामंत्री का भी उद्बोधन हुआ। ■

ABVP 65th National Conference, Resolution-2

Present scenario of the country

India is marching towards development witnessing positive growth and initiations. ABVP congratulates ISRO for its immense contribution in the field of space research and also heartily congratulates the launch of Chandrayaan 2. ABVP also congratulates the Daughters of India Hima Das, PV Sindhu ,Manasi Joshi, Chitra who made the nation proud in the international status by bagging gold medals to the mother country. Abhijeeth Banarjee renowned economist is also been congratulated for being awarded the noble price . ABVP appreciates the governments decision of keeping up the faith of Sikh's by opening the Kartarpur corridor for Indian pilgrimage on the 550th birth anniversary of Guru Nanak .

This 65th National conference of ABVP remembers the sacrifice of thousands of hero's who shed their blood on 13th April 1919. Nation commemorates 100th year of Jallianwala bagh. ABVP urges the youths of nation to organise lectures and discussions on the same .

Recent survey conducted by NSSO (National sample survey office) states that the unemployment rate in India has raised by 6.1% This drop in employment is influenced to the drop in economic growth in major job sectors such as manufacturing, real estate, FMGC, agriculture etc. This 65th national conference of ABVP demands the government to find new areas and opportunities of economic development that will generate jobs

This year 13 states of our country have witnessed serious floods which has affected the livelihood of the people of Maharashtra, Bihar, Karnataka and many other states . More than 1600 people thousands of cattle's have lost their lives in this disaster . This has caused innumerable losses . This national conference of ABVP demands the union government to take necessary measures with regard to this . ABVP also appreciates the response and support of National disaster response force and Indian army personnel's for their work during this disaster .

Recent air quality reports in the national capital and surrounding places are an alarming signs of the negligence of the protection of environment. ABVP in this national conference appeals the union government to revisit the Environment protection act of 1986 and make necessary amendments for aggressive environmental protection. ABVP also requests the citizens of the country to act responsibly to implement strict rules and regulations on it . ABVP is of the opinion that proper disposal of E-Waste should also be done on priority .

The composite water management index report (2018) released by the NITI Aayog states that 21 major cities including Delhi , Bengaluru , Hyderabad, Chennai and others will have deteriorated ground water levels by the year 2020. Water is the key player for all the habitats ABVP is of the opinion that to overcome this issue one must practice rain water harvesting and restoration of lost water bodies . It is the need to have a decentralised approach to tackle water problems .

India is the nation of youths. It is disappointing to note that the influence of drugs in these young minds are very high . According to the UN survey a report claims that there has been a 30% increase in the usage of drugs when compared to the last decade in India . People belonging to 15-65 years of age are the most influenced and involved in it . ABVP appeals the people especially the youngsters to address these problems and overcome it at the earliest and create the Drug free society . This national conference demands the government to take necessary actions with regard to this . This 65th National conference of ABVP is of the

clear view that in several states such as Jammu Kashmir, Punjab, Tripura, Maharashtra and others the number of infiltrates is more ABVP demands the union government to execute the NRC law across the country in all the states which will ensure the strengthening of social ,economic ,cultural and political forms in the country . The nation is being witnessing the Breaking India forces try to affect the unity and integrity of the nation . Caste based politics is also the concern of the minute . Riots in Punjab in resurging the call of Khalistan , violent acts in the state is kerala are few disturbing developments in the nation . Murder of the RSS activist at Murshidabad, 40 riots in just a span of 2 years in the state of West Bengal has lead the state to anarchy .

This 65th National conference of ABVP condemns these developments and demands the government to take up serious actions on this . ABVP calls out to the citizens of India to raise voice against such incidents and stand together to fight these nation breaking forces and aid in the development of the nation. ■

डूसू ने की अपील, तदर्थ (एडहॉक) शिक्षकों की नौकरी विवाद को सुलझाएं कुलपति

दिल्ली विश्वविद्यालय में एडहॉक शिक्षकों की नौकरी विवाद का मामला गहराता जा रहा है। मामले पर तत्परता दिखाते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) ने डूटा, डूपा और दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति से हज़ारों एडहॉक शिक्षकों की नौकरी संबंधी विवाद समाप्त कर विषय को सुलझाने की अपील की है।

गौरतलब है कि दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से 28 अगस्त को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के नियमों का हवाला देते हुए कहा था कि एडहॉक शिक्षक के बजाय अतिथि शिक्षक रखे जाएं। यूजीसी के इसी नियमों का हवाला देते हुए डीयू के सभी महाविद्यालयों के प्राचार्य (Delhi University Principal Association - DUPA) ने वेतन रोकने का आदेश जारी किया था। वहीं, दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (डूटा) ने दिल्ली विश्वविद्यालय के तदर्थ शिक्षकों की पुनःनियुक्ति को प्रशासन द्वारा अधर में लटकाने के निर्णय की प्रतिक्रिया में अनिश्चितकालीन हड़ताल का आह्वान किया है।

डूसू का कहना है कि इस हड़ताल का आह्वान गलत समय में किया गया है। सेमेस्टर परीक्षाएं शुरू हो चुकी हैं, यह गतिरोध छात्रों के भविष्य के लिए हानिकारक है। लगभग 4500 तदर्थ शिक्षकों के कार्यकाल का 'जिनमें अधिकतर शिक्षक लंबा शैक्षिक अनुभव रखते हों', पर किसी भी प्रकार के विकल्प प्रस्तुत किए बिना, कार्यकाल को अधर में लटकाना ठीक नहीं है। दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति इस गतिरोध के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार हैं। डूटा अध्यक्ष के इस निर्णय से स्पष्ट ही राजनीति की बू आ रही है।

डूसू ने दो दिसंबर को सभी महाविद्यालयों के छात्रसंघों के साथ बैठक की और निम्न प्रस्ताव पारित किया -

1.यह सुनिश्चित किया जाए कि परीक्षा समय पर हो और किसी भी स्थिति में परीक्षा प्रभावित न हो।

2. एडहॉक शिक्षकों की सेवा को विस्तार दिया जाए और तुरंत वेतन जारी करने की व्यवस्था की जाए।

3. 28 अगस्त को इस संदर्भ में जारी किए गए पत्र को विश्वविद्यालय वापस ले तथा विश्वविद्यालय के कुलपति और डूटा अध्यक्ष अपनी दुर्भावनापूर्ण राजनीतिक खेल को समाप्त करें।

डूसू ने अपने संयुक्त बयान में कहाः "हम किसी भी स्थिति में सेमेस्टर परीक्षा में देरी या रद्द नहीं होने देंगे। हम इस मुद्दे पर डीयू कि एडहॉक शिक्षकों के साथ हैं , लेकिन डूटा अध्यक्ष की विफलता ने सभी को निराश किया है। ऐसी स्थिति नहीं बननी चाहिए जहाँ पर छात्रों का नुकसान हों। वीसी को इसका हल खोजना होगा , नहीं तो प्रशासन को छात्रों का आक्रोश झेलने के लिए तैयार रहना होगा।"

डूसू की बैठक का आयोजन डूसू अध्यक्ष अक्षित दहिया, उपाध्यक्ष प्रदीप तंवर, संयुक्त सचिव शिवांगी खरवाल द्वारा किया गया था। बैठक में डीयू के विभिन्न कॉलेजों के निर्वाचित छात्र संघ पदाधिकारियों ने इस बैठक में भाग लिया। ■

विद्यार्थी परिषद की कार्यपद्धति, स्वरूप और प्रासंगिकता: सुनील आंबेकर

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 65 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के तीसरे दिन परिषद कार्यपद्धति, स्वरूप और प्रासंगिकता के सत्र को संबोधित करते हुए विद्यार्थी परिषद के निवर्तमान राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर जी ने कहा कि आज का दिन राष्ट्र के लिए स्मरणीय है क्योंकि भारत के महान सपूत लाचित बरफुकन जी जन्म आज ही के दिन यानी 24 नवंबर को हुआ था। "लचित बोरफुकान"असम के क्रान्तिकारी सबके लिए प्रेरक है, इसका महत्व समस्त विश्व समझेगा। हमारा प्रत्येक कार्य उस दिशा में बढ़ता कदम है। अपनी इतने दिनों की यात्रा में हमने स्थापित किया कि देश के युवाओं का जागृत और संगठित किया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर आंदोलन, सेवा और अन्य कई रचनात्मक कार्य परिषद हाथ में लेता है। परिषद की कार्यपद्धति के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि अभाविप ने देश सेवा के लिए युवाओं को जागृत एवं संगठित किया। अभाविप आंदोलन, सेवा एवं अन्य रचनात्मक कार्यों के जरिये देश के युवाओं को जोड़ती है। विद्यार्थी परिषद की कार्य पद्धति में मात्र एक व्यक्ति को श्रेय नहीं अपितु एक टीम कार्य करती है। यह कार्यपद्धति रा. स्व. संघ के आद्य सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार की विचारों के अनुरूप ही विकसित की गई है, जिसमें एक कार्यकर्ता या व्यक्तित्व निर्माण का विश्वास जागृत होता है। कार्य पद्धति का विकास प्रत्यक्ष आचरण से हुआ, यह मात्र सिद्धांत भर नहीं है। मनुष्य के मूल गुण धर्म बदले नहीं, अतः पता हमारी कार्यपद्धती का स्थाई मूल भी प्रासंगिक बना रहता है। स्वागतशीलता को बनाए रखना है, इसके लिए इकाइयों को वास्तविक अर्थ प्रदान करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि कोई भी कार्यकर्ता किसी व्यक्ति के स्नेहवश जुड़ेगा बाद में वह पूरे परिषद कार्य के लिए समर्पित होगा। परिषद में प्रत्येक कार्यकर्ता महत्वपूर्ण है लेकिन कोई अपरिहार्य नहीं। बैठकों में कार्य पद्धति का भाव अत्यंत महत्वपूर्ण है कार्य पद्धति के विकास

के कारण शिक्षा क्षेत्र के लोगों में विकास हो रहा है आज के समय में देश के हर हिस्से में परिषद का कार्य बढ़ रहा है। हर व्यक्ति को कार्य - हर कार्य के लिए कार्यकर्ता परिषद की कार्ययोजना है। बैठकों में औपचारिकता की आवश्यकता कार्यपद्धति का भाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। साथ ही साथ सहभागिता को बढ़ाने की भी आवश्यकता है।

हमारी रचनात्मक कार्य और कार्य पद्धति में निरंतरता आवश्यक है। कार्य विभाजन, नवाचार को देखते हुए अभाविप ने सिद्ध किया है कि संख्या के साथ-साथ हमारे कार्यों की गुणवत्ता भी बढ़ी है।

कार्यपद्धति को सही स्वरूप में और तत्परता से पालन करने की आवश्यकता सदैव बनी रहेगी।

बदलती तकनीक में रूढ़ होने के स्थान पर उसे स्वीकार कर उपयोग में लाने की आवश्यकता है।

कार्यकर्ता के गुणों की चर्चा सर्वत्र तथा दोषों की चर्चा यथास्थान पर की जानी चाहिए। पूर्व योजना, पूर्ण योजना, सभी गुणों वाले कार्यकर्ताओं का उचित समायोजन अति आवश्यक है। कार्यपद्धति के आधार से कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। अभाविप ने सिद्ध किया है कि संख्या के साथ – साथ हमारे कार्यों की गुणवत्ता भी बढ़ाई जा सकती है और परिषद ने बढ़ाई भी है। कार्यकर्ताओं को अनामिकता की सीख देते हुए कहा कि वैसे तो हर पद दायित्व है परंतु हर दायित्व पद नहीं है। सोशल मीडिया के दौर

में हर दायित्व - पद बन जाता है, इसे समझना होगा। सोशल मीडिया सक्रिय रहना जरूरी है लेकिन वहां पर मर्यादा का पालन करना जरूरी है। सोशल मीडिया के आने के पहले दीवार लेखन होता था, लेखन के दौरान कोई भी कार्यकर्ता अपना नाम नहीं लिखता था बल्कि संगठन के नाम में ही खुद का नाम जुड़ा महसूस करता था लेकिन क्या सोशल मीडिया पर ऑनलाइन वॉल लेखन पर इसका पालन हो रहा है। हमें सांगठनिक मर्यादा को पालन करते हुए खुद के बजाय संगठन की प्रसिद्धि के लिए प्रचार करना चाहिए।

संगठन के विस्तार में संपर्क का महत्वपूर्ण योगदान है। संपर्क के लिए पहले डायरी में लोगों का डेटा सूचीबद्ध करते थे परंतु अब डायरी के परे जाकर तकनीक प्रदत्त संसाधन का उपयोग करना चाहिए। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि मेरा केवल भाषण ही ठीक न हो अपितु उसका प्रस्तुतीकरण भी अच्छी हो। कार्यपद्धति की भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि परिषद के कार्यपद्धति का विस्तार केवल तांत्रिक नहीं बल्कि भावनात्मक रूप से भी होना चाहिए। इसके लिए कार्यकर्ताओं के लिए कार्यक्रम, अनौपचारिक संबंध, संवेदना का जागरण, प्रशिक्षण और ज्ञानवर्धन की जरूरत है। उन्होंन कहा कि परिषद का कार्य कितना भी बढ़ जाए परंतु हम अपनी मूल बात को नहीं छोड़ेंगे। बदलते युग में नवाचार के साथ परिषद अपने मूल को नहीं छोड़ सकता। ■

तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में होंगे दो-दो प्रांत

अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. सुबैय्या ने कहा कि विद्यार्थी परिषद के बढ़ते कार्य को देखते हुए निर्णय हुआ कि तमिलनाडु एवं पश्चिम बंगाल के दो अलग प्रांत करने की आवश्यकता है। उत्तर तमिलनाडु जिसमें 20 जिले होंगे, इसका केन्द्र चेन्नई होगा। दक्षिण तमिलनाडु में 18 जिले होंगे जिसका केन्द्र मदुरै होगा। दक्षिण बंगाल में 15 जिले होंगे और इसका केन्द्र कोलकाता होगा। उत्तर बंगाल में नौ जिले होंगे, इसका केन्द्र सिलीगुड़ी रहेगा।

सम्पूर्ण भारत में नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजन्स (एनआरसी) लागू करने का फैसला स्वागत योग्य : अभाविप

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारत सरकार द्वारा पूरे देश में नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजन्स (एनआरसी) लागू करने के कदम का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करती है। चूंकि असम में एनआरसी की प्रक्रिया दस्तावेजों के सत्यापन में त्रुटियां हुई थीं, इसलिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद यह मांग कर रही थी कि हाल ही में प्रकाशित एनआरसी को अस्वीकृत किया जाए। भारत सरकार के माननीय गृह मंत्री द्वारा राज्यसभा में दिए गए बयान से यह स्पष्ट हुआ है कि एनआरसी की प्रक्रिया पूरे देश में होगी।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद सभी राजनीतिक दलों से आह्वान करती है कि दलगत राजनीति से ऊपर उठकर व्यापक राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए, इस महत्वपूर्ण निर्णय का समर्थन करें। साथ ही अभाविप देशभर में सक्रिय सामाजिक, धार्मिक तथा छात्र समुदायों से आह्वान करती है कि पूरे भारत में एनआरसी के मुद्दे पर व्यापक समाज जागरण करते हुए राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा को मजबूत बनाएं।

अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री ने सरकार के इस कदम का स्वागत करते हुए कहा कि अभाविप लंबे समय से पूरे देश में एनआरसी लागू करने की मांग हेतु संघर्षरत थी। निश्चित रूप से एनआरसी के पूरे देश में लागू होने से विभिन्न दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण महत्वपूर्ण सुधार की संभावनाएं हैं। सरकार के इस निर्णय से असम में एनआरसी के संदर्भ में हम सत्यापन की जिन त्रुटियों की ओर सरकार का जिस प्रकार ध्यान आकर्षित कराना चाह रहे थे, उस समस्या का समाधान भी इस निर्णय के द्वारा संभव हो पाया है। भारत सरकार के इस निर्णय का अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद हार्दिक स्वागत करती है। ■

ABVP 65th National Conference, Resolution-3

New dawn of opportunities in Jammu-Kashmir and Ladakh post Abrogation of Art. 370

The decision taken on August 5th, 2019 to abrogate Art.370 and 35-A is a historical decision in light of Unity, Integrity and development of the nation, furthering the total integration of Jammu-Kashmir, that is the crown of Bharat Maata. Historically Jammu-Kashmir has always been an integral part of Indian ethos, but due to selfish political decisions after independence, the region was kept away from full socio-economic integration with other parts of India. The establishment of the new Union Territories of Jammu-Kashmir and Ladakh is a new beginning for their economy and social justice after the abrogation of temporary and Unconstitutional provisions like Art.370 and 35-A which was nurturing separatism, terrorism and inequality. ABVP has fought against these provisions since 1950. ABVP led the historic 'Chalo Kashmir' march of 1990 with slogan 'Jaha hua tirange ka aapman, wahi karenge uska samman'. Each ABVP karyakarta working in every corner of India truly believes the slogan 'Kashmir ho ya Guwahati, aapna desh aapni mati!' This National Conference of ABVP welcomes the order of Hon'ble President of India to abrogate Art.370 and 35-A and the Parliaments decision to pass the subsequent resolutions .The ABVP congratulates all the citizens of Union territories of Jammu-Kashmir , Ladakh and also rest of nation.

The Pakistan sponsored terrorism in the valley is in steep decline because of the abrogation of Art.370 and 35-A. The inequality and injustice suffered by West Pakistani Refugees, Valmiki as well as Gorkha Community and women has come to an end after abrogation of these articles. All the inapplicable enactments of law like 'scheduled caste and tribal reservations', RTI Act and other 106 acts which were previously inapplicable in the region are now applicable in both of the union territories. ABVP welcomes this step towards re-establishing social justice. Laddakh which was longly being neglected has now added a new chapter in the diversity of nation after becoming U.T.ABVP welcomes this decision.

The support extended by other political parties to the courageous constitutional decision taken by central government is also commendable. The support extended to us by other Nations showcases the success of our diplomatic policies.

The execution of the decision was peaceful, maintained unity and no incident of clashes and destruction of property occurred. This National Conference of ABVP appreciates the authorities for their successful efforts to maintain the situation.

It is a thoughtful opinion of this National Conference that:

- Challenge of unemployment should be tackled by promoting Tourism and other small-scale industries along with establishing large industries in the region.
- State should ensure the security of every

individual. Traders, Businessmen and Shopkeepers should feel secure from the claws of separatism and terrorism.

- Temples and places of cultural and spiritual importance damaged by terrorist and miscreants should be reconstructed, repaired and opened for public. The declaration by Govt. regarding opening of temples is a welcome step and should be executed at the earliest.
- There is need of adoption of policy to take care of the victims of the religious extremism which has been propagated in this region for last few decades. There must be a policy like Bharat Darshan for students of universities and colleges of Jammu-Kashmir.
- Lack of basic necessities like education and health in the region of Ladakh should be addressed as a matter of priority.
- Restructuring the constituencies of Jammu-Kashmir Assembly to ensure just representation of the people of Jammu division.
- Rehabilitation efforts for the Hindu refugees who were driven out of the valley in 1990 using violence should be initiated by the government along with ensuring their safety and security.
- Government should provide the necessary aid to the victims and the families of the victims of separatism and terrorism.

Massive voter turnout in the recent polls proves the people of region are now breaking free of the political dynasties and standing for their own democratic interests. ABVP appeals to the students and youth of Jammu-Kashmir and Ladakh to step out of the venomous deception propagated by some political parties and its leaders and contribute in to the development of their region and our great nation. ■

ABVP 65th National Conference, Resolution-4

Congratulations on the arriving of the long awaited verdicton Ram Janmabhoomi

The 65th National Conference of ABVP welcomes and congratulates the long awaited verdict related to the birth place of Prabhu Sri Ramachandra, after taking into consideration of multiple evidences and facts based on reference literatures, examinations, archeological findings which is supportive to the eternal feelings of the people of India. Worlds most significant, discussed and decades awaited court verdict has taken away the anxiety among the people. Nature, dignity of Indians was witnessed while accepting the verdict with peace and harmony. Ethos of unity in diversity was experienced which is admirable. People of India have a strong belief that a grand temple of Bhagawan Sri Ramachandra will be elevated in time.

This 65th National Conference of ABVP congratulates everybody who are the reason in bringing a positive and vibrant environment filled with oneness. ■

परिषद कार्यपद्धति का आधार है सामूहिकता: डॉ. एस. सुबैय्या

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए तमिलनाडु प्रांत अध्यक्ष, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और आगरा में आयोजित अभाविप के 65 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में लगातार तीसरी बार राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में पुनर्निवाचित डॉ. एस. सुबैय्या मूलत: तमिलनाडु के तुतकुड़ी जिले से हैं। डॉ.सुबैय्या चिकित्सा क्षेत्र में कैंसर विशेषज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। बता दें कि डॉ. सुबैय्या ने अब तक एक हजार से अधिक सर्जरी, लगभग ढ़ाई दर्जन चिकित्सीय शोधपत्र राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्र – पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. सुबैय्या राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में पुननिर्वाचित हुए हैं। चिकित्सा, स्वास्थ्य, शिक्षा, अभाविप के कार्य समेत तमाम ज्वलंत विषयों को लेकर 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' के स. संपादक अजीत कुमार सिंह ने डॉ. सुबैय्या से बात की। प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश –

लगातार तीसरी बार राष्ट्रीय अध्यक्ष का दायित्व मिलने पर आप कैसा महसूस कर रहे हैं?

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से बतौर समान्य कार्यकर्ता मैं 1986 में जुड़ा तब से लेकर आज तक तक मैं कार्यकर्ता के रूप में कार्य कर रहा हूं। समय – समय पर परिषद के द्वारा जो भी दायित्व दिया गया मैंने ईमानदारीपूर्वक उसका निर्वहन किया। लगातार तीसरी बार परिषद के द्वारा मुझे राष्ट्रीय अध्यक्ष का दायित्व सौंपा है, मेरी पूरी कोशिश रहेगी कि पूर्व की भांति इस दायित्व का भी अच्छे तरीके से निर्वहन करूं और परिषद के विचारों को प्रत्येक परिसर तक पहुंचाऊं।

विद्यार्थी परिषद के रचनात्मक कार्यों के बारे में बतायें।

अभाविप छात्र हितों को लेकर केवल आंदोलन ही नहीं करती अपितु विकासार्थ विद्यार्थी, सेवार्थ विद्यार्थी जैसे प्रकल्प के माध्यम से समाज में रचनात्मक कार्य भी रही है। सामाजिक अनुभूति के माध्यम से हम जहां समाज के अंतिम व्यक्ति की संवेदना से छात्रों को परिचित करवा रहे हैं वहीं विकासार्थ विद्यार्थी के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का काम। परिषद की स्वीकार्यता शैक्षिक परिसर से आगे निकलकर सामाजिक संगठन के रूप में स्थापित हो चुकी है।

विद्यार्थी परिषद की कार्यपद्धति के बारे में बतायें।

विद्यार्थी परिषद एक प्रवाहमान छात्र संगठन है। परिषद की कार्यपद्धति मैं नहीं हम पर आधारित है। सामूहिकता, परिषद के कार्यपद्धति का आधार है। समान्यतः जीत होने पर उसका श्रेय लेने की होड़ मची होती है लेकिन विद्यार्थी परिषद में स्थिति उलट है यहां जीत होने का श्रेय दूसरों को और पराजय की जिम्मेवारी खुदः पर लेते हैं। हमलोग कार्यकर्ता को प्रदेश मंत्री, प्रदेश अध्यक्ष जैसे पद नहीं बल्कि दायित्व देते हैं। अभाविप 'प्रत्येक कार्यकर्ता महत्वपूर्ण है लेकिन कोई भी अपरिहार्य नहीं' सिद्धांत पर कार्य करती है। परिषद के सभी निर्णय सामूहिक रूप से लिया जाता है। एक कहानी मैं आपको बताता हूं – एक बार चार अंधे, हाथी का अवलोकन कर रहे थे, एक ने हाथी का सूंड़ पकड़ा तो कहा कि

यह सर्प जैसा प्रतीत होता है, एक ने पैर पकड़ा को तो उसे खंभा कहा, एक ने विशालकाय शरीर को छुआ तो उसे दीवार कहा और एक ने पूंछ को पकड़कर कहा कि यह रस्सी है। ठीक उसी प्रकार लोग विद्यार्थी परिषद का बाह्य अवलोकन करते हैं। अगर विद्यार्थी परिषद को समझना है तो परिषद से जुड़िये, इसके कार्यपद्धति को जानिये अन्यथा उसी अंधे की तरह अपना – अपना अनुमान लगाते रहेगें। परिषद को जानने के लिए इसको जीना पड़ेगा, बाह्य रूप से परिषद का अवलोकन नहीं कर सकता। संपर्क, बैठक और संवाद परिषद की कार्यपद्धति है, यहां पर कोई भी कार्यकर्ता व्यक्तिगत स्वार्थ से कार्य नहीं करते बल्कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए कार्य कर रहे हैं।

चिकित्सा क्षेत्र में परिषद के द्वारा किये जा रहे कार्यों के बारे में बतायें।

हमारे देश में चिकित्सा में गांव की अपेक्षा शहर में बेड्स की संख्या अधिक है। ग्रामीण क्षेत्र में एक तो अस्पताल कम है और जहां है भी वहां बेड्स की संख्या कम है। हांलाकि पिछले कुछ वर्षों में सुधार हुआ है लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। दूसरा, मेडिकल की पढ़ाई करने वाले छात्रों में सेवा की भावना कम व्यक्तिगत उपलब्धि को पाने की इच्छा ज्यादा रहती है। तीसरा, चिकित्सा का उद्यमीकरण हो गया है। उक्त सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर अभाविप के द्वारा मेडिविजन नाम से एक प्रकल्प बनाया गया है जो मेडिकल के छात्रों के बीच काम कर रहा है। मेडिकल छात्रों के बीच सेवा की भावना को विकसित करने, उनकी परेशानियों को संबंधित मंच पर ले जाकर उसका निदान करवाना, हमारा कर्तव्य है और हम इसका निर्वहन भी कर रहे हैं। चिकित्सा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए परिषद ने अनेकों कार्य किये हैं। ऐसे छात्र जो वनवासी क्षेत्र, सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में जाकर लोगों की सेवा कर कर रहे हैं, उसे हम अधिवेशन में रॉल मॉडल के तौर पर प्रस्तुत करते हैं। ऐसे ही परिषद के एक कार्यकर्ता हैं डॉ. कोकले, जो पैदल 40 किमी की दूरी तय कर वनवासी क्षेत्र में काम कर रहे हैं, उनके योगदान को हम मेडिकल के छात्रों के बीच रखते हैं। तीसरा पहलू यह भी है कि जमीनी स्तर पर आज भी चिकित्सा शिक्षा कोसों दूर है, हमें चिकित्सा शिक्षा को प्राथमिक स्तर से ही लागू कर देनी चाहिए ताकि आम छात्र चिकित्सा को लेकर जागरूक हो सके। मेडिविजन के अलावा आयुर्वेद एवं फार्मा क्षेत्र के लिए जिज्ञासा और फार्माविजन के नाम से हमारा काम चल रहा है। इस तरह के अनेकों प्रयास है जिसके माध्यम से विद्यार्थी परिषद देश की चिकित्सा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए कार्य कर रही है।

मेडिकल छात्रों के बीच सेवा की भावना को विकसित करने, उनकी परेशानियों को संबंधित मंच पर ले जाकर उसका निदान करवाना, हमारा कर्तव्य है और हम इसका निर्वहन भी कर रहे हैं। चिकित्सा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए परिषद ने अनेकों कार्य किये हैं। ऐसे छात्र जो वनवासी क्षेत्र, सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में जाकर लोगों की सेवा कर कर रहे हैं, उसे हम अधिवेशन में रॉल मॉडल के तौर पर प्रस्तुत करते हैं। ऐसे ही परिषद के एक कार्यकर्ता हैं डॉ. कोकले, जो पैदल 40 किमी की दूरी तय कर वनवासी क्षेत्र में काम कर रहे हैं, उनके योगदान को हम मेडिकल के छात्रों के बीच रखते हैं। तीसरा पहलू यह भी है कि जमीनी स्तर पर आज भी चिकित्सा शिक्षा कोसों दूर है, हमें चिकित्सा शिक्षा को प्राथमिक स्तर से ही लागू कर देनी चाहिए ताकि आम छात्र चिकित्सा को लेकर जागरूक हो सके।

कश्मीर से अनुच्छेद 370, 35 ए को हटा दिया गया एवं राम मंदिर पर भी न्यायालय का फैसला आ चुका है। अब आगे विद्यार्थी परिषद क्या रणनीति होगी?

वर्ष 2019 में विद्यार्थी परिषद के बहुप्रतीक्षित मांग पूरी हुई है। कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाने के लिए विद्यार्थी परिषद ने चलो कश्मीर का नारा दिया था जबकि भारतीय संस्कृति के आधारस्तंभ भगवान राम का अयोध्या में भव्य मंदिर हो, यह करोड़ों देशवासियों का सपना था। भारत सरकार ने कश्मीर अनुच्छेद 370 को हटाया दिया है अब वहां के लोग आत्मीयता के साथ शेष भारत के साथ जुड़ पायेगें, विकास के द्वार खुलेंगे। अनुच्छेद 370 विकास और आत्मीयता के बीच दीवार बनकर खड़ा था। देश की सर्वोच्च अदालत ने तर्क एवं तथ्य के आधार पर अयोध्या में मंदिर निर्माण का फैसला सुनाया है, जिसका हरेक भारतवासी ने दिल से स्वागत किया है। परिषद भी इस फैसले का अभिनंदन करती है। रही बात आगे की रणनीति की, तो मैं बता दूं कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद शिक्षा क्षेत्र में काम करने वाला छात्र संगठन है, इसकी कोई रणनीति नहीं है। हम तो राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के यात्री है। राष्ट्र का उत्थान और पुनर्निर्माण ही हमारा लक्ष्य है। ■

भारत में हैं रोजगार की अपार संभावनाएं : मराठे

राष्ट्रीय अधिवेशन में **रोजगार परिदृश्य और संभावनाओं** पर चर्चा करते हुए भारतीय रिजर्व बैंक के निदेशक सतीश मराठो ने कहा कि यूरोप और जापान में उम्रदराज लोगों की जनसंख्या बढ़ी है। वहां मानव संसाधन का स्थान रोबोटिक्स ले रहा है। इसी तरह भारत में श्रम कानून सख्त है, इससे बचने के लिए नए छोटे उद्योगों में रोबोटिक्स का इस्तेमाल बढ़ा है। इससे निजी क्षेत्र में भी रोजगार सृजन कम हो रहा रहा है। इन हालातों में देश क श्रम कानून में बदलाव लाने की जरूरत है। लघु उद्योगों को लंबे समय तक फंड देना होगा, इससे नए उद्योग खड़े हो सकेंगे। विश्व के देशों की तुलना में भारत की विकास दर बेहतर है। उन्होंने स्वरोजगार और पढ़ाई के साथ कौशल विकास पर जोर देने की बात कही।

मराठे ने कहा कि दुनियाभर में मंदी का दौर है, लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था मंदी नहीं सुस्ती के दौर से गुजर रही है। यहां उद्योगपतियों पर पूंजी की कमी नहीं है। वह वैश्विक बाजार से डरे हुए हैं। उनकी नए उद्योग लगाने में निवेश करने में भी दिलचस्पी नहीं। इससे भी युवाओं के सामाने रोजगार का संकट पैदा हुआ है। आगरा कॉलेज मैदान पर आयोजित अधिवेशन स्थल के गुरूनानक देव नगर में उन्होंने कहा कि चौथी औद्योगिक क्रांति के लिए भारतीय बाजार और यहां के उद्योगपति तैयार नहीं है। यह चिंता का विषय है, विनिर्माण के क्षेत्र में निवेश नहीं हो रहा है। मगर, मेक इन इंडिया के सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। ट्रेड एंड टैरिफ पॉलिसी में किये जा रहे से भी अर्थव्यवस्था में सुधार होगा। ■

भारतीयों ने केवल नौकरी को ही रोजगार समझा है : निखिल रंजन

अधिवेशन के तीसरे दिन विमर्श सत्र पर बोलते हुए अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री निखिल रंजन ने कहा कि भारत में रोजगार की स्थिति ऐसी है कि भारत की जनसंख्या के हिसाब से 16 करोड़ जनसंख्या बेरोजगार है और भारतीय युवाओ ने केवल सरकारी व प्राइवेट को ही अपना रोजगार समझा है,रोजगार केवल सरकार के माध्यम से मिलने वाला नहीं है, बल्कि समाज द्वारा युवाओं को रोजगार दिया जा सकता है। ■

गैर कृषि क्षेत्र में रोजगार सृजन की जरूरत : संतोष मेहरोत्रा

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के डॉ. संतोष मेहरोत्रा ने कहा कि 2008 की वैश्विक मंदी के बाद दुनिया के 100 देशों नें औद्योगिक नीति लागू की है, लेकिन भारत में यह नीति लागू नहीं हो सकी है। भारत में केवल औद्योगिक नीति से काम नहीं चलेगा, इसके साथ रोजगार नीति भी बनाने की जरूरत है। भारत जनसांख्यकीय लाभांश के दौर से गुजर रहा है। 2040 तक देश में कमाने वालों की संख्या (25 से 50 साल की उम्र) अधिक हैं और निर्भर लोगों की संख्या कम है। ऐसे में युवा और समाज को गैर कृषि क्षेत्र में रोजगार सृजन करता है तो देश की अर्थव्यवस्था में उछाल आएगा। उन्होंने कहा कि 2013 में शहरी क्षेत्रों में 45 फीसद और ग्रामी क्षेत्रों में 55 फीसद परिवारों के बैंक एकाउंट थे। 2017 में 99.5 फीसद परिवारों के बैंक एकाउंट है। उन्होंने कहा कि लोगों को ऑटोमोबाईल, होटल एंड रेस्टोरेंट, लैंड ट्रांसपोर्ट, टेलीकॉम, इंश्योरेंस कंप्यूटर एंड रिसर्च, एजूकेशन, हेल्फ जैसे सर्विस सेक्टर क्षेत्र में रोजगार मिल रहा है। ■

सही इतिहास को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाए सरकार : शिंदे

अभाविप के **राष्ट्रीय एकता विमर्श** सत्र में विश्व विख्यात पुरातत्व विद और डेक्कन विश्वविद्यालय पुणें के कुलपति प्रो. बसंत शिंदे ने वैज्ञानिक तरीक से इसका विश्लेषण किया। उन्होंने बताया कि भारतीय के डीएनए पर एक रिसर्च 2006 में शुरू की गई। भारत में आने वाले कौन थे, इसके प्रमाण जुटाए गए। सरस्वती नदी के किनारे हरियाणा के राखीगढ़ी में शहरी बसावट के अवशेष निकले। उसे दुनिया के सामने लाया गया है। इसमें पांच से 5. 5 हजार साल पुराने नरकंकाल निकाले गए। डीएनए से पता चला कि यह दक्षिण एशिया में 12 हजार साल पहले पैदा हुआ था यानि हमलोग हड़प्पन के वंशज है। जबकि इसे तोड़-मरोड़कर पेश किया जाता रहा है। दुनिया के सबसे विश्वस्त जर्नल में इसका प्रकाशन यह साबित करता है कि शोध के दौरान जेनेटिक डाटा और पुरात्विक अवशेष भी जुटाए गए। यहां लोगों की दिखावट का कोरियन विशेषज्ञों के साथ विश्लेषण किया गया। किताबों में लिखा गया कि आर्य बाहर से आए थे। उन्होंने सभ्यता को नष्ट किया। अंग्रेज और जर्मनों ने इसे विकसित किया। प्रो. शिंदे ने सरकार से अपील की है कि वे सही इतिहास को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाए। नई रिसर्च में यह साबित हुआ कि हमने ही दुनिया में सबसे पहला शहरीकरण किया था। ■

एक रात पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के लोग भारतीय हो जाएंगे : श्रीहरि बोरिकर

वो कितना बुरा दिन था जब रात को सोए भारतीय सुबह पाकिस्तानी हो गए। पूर्व और पश्चिम पाकिस्तान के नागरिक हो गए। ऐसा ही एक दिन आयेगा जब पीओके के लोग पाकिस्तानी होकर सोएंगे और सुबह होते ही वह भारतीय हो जाएंगे। ये बातें अभाविप के अखिल भारतीय विश्वविद्यालय कार्य प्रमुख श्रीहरि बोरिकर ने जताई। उन्होंने कहा कि 1945-47 के बीच तीन साल तक लोग हर रात आजादी का ख्वाब देखते रहे। अचानक यह टूट गया। विभाजन में जो लोग पाकिस्तान रह गए उनका क्या दोष था? यह फैसला लेने वालों की गलती थी। इसके बाद 1948 में उन पर अत्याचार किये गये। 1948 में बांग्लादेश में बड़ा नरसंहार हुआ। तबसे यह सिलसिला जारी है। सभी यातनाएं झेल रहे हैं। ऐसे लोगों को सबसे सुरक्षित देश भारत लगा लिहाजा वे शरणार्थी बनकर चले आए। अफसोस कि उन्हें अभी तक भारत की नागरिकता नहीं मिली है। वे रिफ्यूजी कहला रहे हैं। लिहाजा ऐसे हिंदू, बौद्ध, सिख समेत सात धर्मों के लोगों को बिना शर्त बिना प्रमाणपत्र नागरिकता देनी चाहिए। 1984-85 में असम से समझौता में घुसपैठियों को बाहर करने की बात कही गई थी। इस पर अमल नहीं किया गया। अब नागरिकता एक्ट में संशोधन किया जा रहा है। उम्मीद है कि नागरिकता संशोधन विधेयक इस बार यह पारित हो जायेगा। हम आशा करते हैं कि एक रात पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के लोग भारतीय हो जाएंगे। हम उस रात का इंतजार कर रहे हैं। ■

मिशन साहसी: छात्राओं ने सीखे आत्मरक्षा के गुर

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने **हरियाणा के सोनीपत** में मिशन साहसी के तहत छात्राओं का विशाल प्रदर्शन किया। महिला सशक्तिकरण एवं आत्म सुरक्षा के लक्ष्य को लेकर शुरू किये गए इस मिशन में विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों की लगभग 4200 हज़ार छात्राओं ने भाग लियाआत्मरक्षा के विभिन्न तौर तरीकों का प्रशिक्षित छात्राओं द्वारा मेगा डेमोंस्ट्रेशन प्रस्तुत किया गया जिसमें छात्राओं ने साहसी और अद्भुत व अनूठे साहस का परिचय दिया। डेमोंस्ट्रेशन में दिखाया गया की कैसे विषम और कठिन परिस्थितयों में एक छात्रा या महिला अपनी सुरक्षा कर सकती है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सुनीता दुग्गल, सांसद, सिरसा संसदीय क्षेत्र ने कहा कि जरूरत पड़ने पर नारी शक्ति फौलाद से कम नहीं है। अपने अध्यक्षीय भाषण में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुषमा यादव ने कहा कि रक्षा और सुरक्षा के बारे में आज सारी दुनिया बात कर रही है, महिला अपनी रक्षा और सुरक्षा करने में काबिल है और अभाविप उसको और सशक्त और साहसी बनने में सराहनीय योगदान दे रही है। विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम

में उपस्थित पदमश्री अरुणिमा सिन्हा ने अपने स्वयं के संघर्ष की कहानी के माध्यम से उपस्थित छात्राओं का मनोबल बढ़ाया और कहा की दृढ़ निश्चय, अटूट लगन और मजबूत आत्मविश्वास के साथ जीवन में कुछ भी असंभव नहीं है।

इस अवसर पर अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री विक्रांत खंडेलवाल, छात्रा प्रमुख ममता यादव, हरियाणा महिला आयोग की अध्यक्ष प्रतिभा सुमन, मीना नरवाल, अध्यक्ष जिला परिषद, सोनीपत और कुलसचिव डॉ. किरण कम्बोज की विशेष उपस्थिति रही। ■

गौरक्ष प्रांत में लगभग 26 हजार छात्राओं ने सीखे आत्मरक्षा के गुर

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा महिला सुरक्षा हेतु चलाए जा रहे छात्रा आत्मरक्षा अभियान 'मिशन साहसी' का भव्य प्रदर्शन चम्पा देवी पार्क, गोरखपुर के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। जिसमें लगभग 6000 छात्राओं ने आत्मरक्षा के सीखे हुए तकनीकों का प्रदर्शन किया। छात्राओं के शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य, सम्मान व स्वावलंबन विषय को लेकर परिषद देश के सभी शिक्षण संस्थानों में छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने व महिला सशक्तिकरण के दृष्टिकोण से मिशन साहसी कार्यक्रम चला रही है। देशभर के सभी जिलों में आज छात्राओं द्वारा सीखे गए तकनीकों का सामूहिक प्रदर्शन देशभर में आयोजित हो रहा है। इस कार्यक्रम में प्रत्येक दिन विशेष

प्रशिक्षकों द्वारा 1 घंटे की ट्रेनिंग लगातार 6 दिन तक प्रदान की गई है जिसके उपरांत चंपा देवी पार्क के प्रांगण में कार्यक्रम का समापन व भव्य प्रदर्शन आयोजित किया गया। मिशन साहसी कार्यक्रम छात्राओं व महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए एक अनूठा प्रयास है। ■

हैदराबाद की हैवानियत के खिलाफ अभाविप का देशव्यापी प्रदर्शन

हैवानियत ऐसी कि रूह कांप जाये, घटना ऐसी कि मानवता शर्मसार हो गया। एक वेटनरी डॉक्टर जो पशुओं का ईलाज करती थी वह मानवी हवसी का शिकार हो गया। हैदराबाद की घटना निर्भया के साथ हुए विभित्स दुराचार को याद दिला रही है। हैदराबाद में हुए हैवानियत का गुस्सा पूरे देश में फूट रहा है। डॉक्टर की चीख सड़क से लेकर संसद तक गूंज रही है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने उन वहसी दरिदों को फांसी की सजा देनी मांग को लेकर देशभर में आंदोलन छेड़ दिया है। परिषद की मानें तो इन वहसी दरिदों को जो भी सजा दें कम है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता हैदराबाद से लेकर दिल्ली, बैंगुलुरू, चेन्नई, मैंगलोर, त्रिवेन्द्रम , अहमदाबाद, जयपुर, शिमला, चंडीगढ़, रोहतक, लखनऊ, मेरठ, वाराणसी, रांची, दुमका, पटना, कोलकाता, भवनेश्वर, भोपाल, रायपुर समेत देश के सभी हिस्सों में प्रदर्शन कर रह रहे हैं। कहीं दरिदों के पुतले को जला रहे हैं तो कहीं कैंडल मार्च निकाला जा रहा है। घटना के बाद देश की राजधानी में इसके लिए बड़ा विरोध प्रदर्शन हो रहा है। सड़क पर बड़ी संख्या में लोग (छात्रा कार्यकर्ता) जुट कर कड़ी सजा की मांग कर रही हैं।

डॉक्टर के परिजनों से मिली अभाविप महामंत्री

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी एवं राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री जी. लक्ष्मण पीड़ित डॉक्टर के परिजनों से मिलकर उन्हें ढ़ांढस दिया और दरिदों को कड़ी से कड़ी सजा दिलवाने की बात की। महामंत्री ने कहा इस तरह की घटना देश को शर्मसार करने वाली है। महिलाओं के खिलाफ बढ़ती बलात्कार तथा शोषण की घटनाओं पर देशभर के सभी विधानसभाओं, विधानपरिषदों में विशेष चर्चा का आयोजन किया जाना चाहिए।

क्या है मामला

तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में एक सरकारी डॉक्टरर के साथ गैंगरेप हुआ था। उनकी हत्या करके शव को जला दिया गया था। महिला एक सरकारी अस्पताल में सहायक पशु चिकित्सक थीं। इस मामले में चार आरोपी पकड़े जा चुके हैं। आरोपियों ने साजिश के तहत डॉक्टर की स्कूमटी से हवा निकाल दी थी ताकि वे महिला डॉक्ट।र को अपने जाल में फंसाकर वारदात को अंजाम दे सकें। चारों आरोपियों पर भारतीय दंड संहिता की धारा 376डी (सामूहिक दुष्कर्म), 302 (हत्या) और 201 (सबूत नष्ट करना) के तहत मामला दर्ज हुआ था। ■

महिला विमर्श और युवा: ममता यादव

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के अंतिम दिन सुबह के सत्र में अभाविप की छात्रा प्रमुख ममता यादव ने अथर्ववेद की पंक्ति "आरोह तमसो ज्योति" (अर्थात - अंधेरे से निकल कर प्रकाश की ओर) से महिला विर्मश और युवा विषय पर अपने भाषण की शुरूआत की। फेमिनिज्म के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि 19 वीं शताब्दी में फ्रेंच शब्द फेमिनिस्में से फेमिनिज्म की शब्द की उत्पत्ति मानी जाती है। यह एक मात्र एक शब्द नहीं है बल्कि सिस्टम के विरूद्ध प्रतिक्रिया है। पूरे विश्व में विशेषतः यूरोप और अमेरिका में महिलाओ के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार होता था। महिलाओं के लिए कोई मानवाधिकार और मत देने अधिकार नहीं प्राप्त नहीं था, ऐसी स्थिति में अंसतोष स्वाभाविक था। परिणामस्वरूप आंदोलन प्रारंभ हुआ। पहले धर्म (चर्च) से मुक्ति की बात की गई फिर स्टेट की मुक्ति। फ्रांस की क्रांति में सभी रिश्ते कॉन्ट्रैक्चूअल माने गए। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद महिलाएं इंडस्ट्री में जानें लगी क्योंकि पुरुष युद्ध में चले गये। ये मजबूरी थी कोई स्ट्रेटजी नहीं।

मार्क्सवादी फेमिनिज्म को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि इसके अनुसार क्रांति ही एकमात्र उपाय है। उनका मानना था कि सामाजिक क्रांति के बाद महिलाओं के जीवन में परिवर्तन निश्चित है। शिकागो विमन्स लिबरेशन के चैप्टर 1972 में समाजावादी फेमिनिज्म के रणनीति की व्याख्या की गई है। सुश्री यादव की मानें तो रेडिकल नारीवाद 1960, पुरूष विरोधी विचार के लिए जाना जाता है। इस विचारधारा के मुताबिक महिलाओं को पुरूष विरोधी व प्रतिद्वंदी के रूप में देखा जाता है। सिमोन द बोऊवर के द्वारा लिखित पुस्तक द सेकंड सेक्स तथा शूलमिथ फायर स्टोन द्वारा लिखित द डायलेटिक्स ऑफ सेक्स को पढ़ने से आपको ज्यादा जानकारी मिलेगी।

महिला संबंधी पश्चिमी अवधारणा एवं इसके प्रभाव की जानकारी देते हुए ममता यादव ने कहा कि विश्व में स्त्री की परिभाषा भारत से भिन्न है। बाइबल के मुताबिक आदम की पसली से ईव को तैयार किया गया है अतः वह सप्लीमेंट्री है, स्त्री का जन्म ही पुरुष को खुश करने के लिए हुआ है। ग्रीक विचार कहता है कि महिलाओं की खोपड़ी में कम स्विचस होते अतः वह पुरुष से कम ज्ञानी है। इसके

मुताबिक जिस तरह गुलाम मालिक के लिए होता है वैसे ही स्त्री पुरुष के लिए है।

उन्होंने पश्चिमी अवधारणा को नकारते हुए उपस्थित कार्यकर्ताओं को स्वामी विवेकानंद के बताए मार्ग पर चलने की बात कही। उन्होंने कहा कि अभाविप में महिलाओं ने सभी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाई हैं। आज राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी जो हैं वह किसी आरक्षण के कारण नहीं बल्कि अपने गुण और क्षमताओं के आधार पर हैं। विद्यार्थी परिषद में छात्र-छात्र में कोई भेदभाव नहीं होता। अधिवेशन में स्त्री शक्ति 25 फीसद है, यह बड़ी बात है। उन्होंने कहा कि हमें विलियम शेक्सपियर की जगह विवेकानंद को पढ़ना चाहिए। शेक्सपियर ने कहा है कि महिलाएं प्रेम के लिए हैं, समझने के लिए नहीं है, जबकि विवेकानंद ने स्त्री-पुरुष को एक ही बताकर एकात्मकता का संदेश दिया। विवेकानंद को केवल फूल चढ़ाने के लिए आराध्य नहीं मानते, बल्कि उनकी शिक्षा के लिए मानते हैं। उन्होंने नारी सशक्तीकरण व वसुधैव कुटम्बकम की बात कही, विद्यार्थी परिषद ने उसे साकार किया। मिशन साहसी के बारे में उन्होंने कहा कि कोई ऐसा जिला नहीं है जहां पांच हजार छात्रओं का कार्यक्रम न हुआ हो। छात्रओं से कहा कि अब यहीं रुकना नहीं है। लगातार आगे बढ़ना है। लड़कियां क्या खाएं, क्या पहनें इन बातों में उलझने के बजाए महिलाएं नेतृत्व कैसे करें और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने की ओर अग्रसर हों। उन्होंने कहा कि जब बेटी खड़ी होती है तो जीत बड़ी होती है। इसी सोच के साथ आगे बढ़ना है। ■

MANOHAR SARKAR
VIKAS APAAR
अफॉर्डेबल हाउसिंग योजना के अंतर्गत
खरीददार कृपया ध्यान दें।
ईडीसी, प्रीमियम, कमीशन देय नहीं है
बिल्डर्स को सलाह
ईडीसी
लागू नहीं है,
यदि वसूल की गई है तो तुरंत लौटाएं
अफॉर्डेबल हाउसिंग
इकाइयों के लिए सरकार द्वारा निश्चित रेट्स के अतिरिक्त
कोई प्रीमियम न वसूला जाए
निर्देशों के उल्लंघन पर काली सूची में शामिल किया जा सकता है
केवल ₹25,000
की कटौती सहित खरीददार द्वारा किसी भी समय वापसी की मांग की जा सकती है
प्रीमियम
वसूलते पाए जाने पर बिल्डर्स का
पंजीकरण रद्द
किसी अतिरिक्त कटौती के बिना
कोई कमीशन लागू नहीं होगा
उल्लंघन पर अपराधिक मामला दर्ज किया जा सकता है।
उपरोक्त संबंधित कोई शिकायत हो तो प्राधिकरण को लिखित में भेजें या
ई-मेल : hareragurugram@gmail.com पर भेजी जा सकती है।
सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा www.prharyana.gov.in

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
राष्ट्रीय पदाधिकारी (2019 – 20)

राष्ट्रीय अध्यक्ष	डॉ. एस सुबैय्या चेन्नई
उपाध्यक्ष	डॉ. आनंद पालिवाल, उदयपुर, चितौड़
	डॉ. रमन त्रिवेदी, पटना, बिहार
	प्रा. प्रशांत साठे, पुणे, महाराष्ट्र
	डॉ. मनु कटारिया, दिल्ली
	डॉ. भूपेन्द्र सिंह, बरेली, ब्रज
राष्ट्रीय महामंत्री	सुश्री निधि त्रिपाठी
राष्ट्रीय मंत्री	श्री उदय आईनाला, हैदराबाद
	श्री अनिकेत ओव्हाल, मुंबई
	श्री राहुल बाल्मीकि, लखनऊ
	श्री नयन शर्मा, गुवाहाटी
	कुं. विनीता इंदवार, गुमला, झारखंड
	श्री सप्तऋषि सरकार, कोलकाता
	श्री हर्षा नारायण, बंगलुरु
राष्ट्रीय संगठन मंत्री	श्री आशीष चौहान, मुंबई
राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री	श्री जी. लक्ष्मण चैन्नई
	श्री श्रीनिवास, पटना
	श्री प्रफुल्ल आकांत, दिल्ली
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	श्री गीतेश सामंत, मुंबई
केन्द्रीय कार्यालय मंत्री	श्री नीरज चौधरकर मुंबई
केन्द्रीय सचिवालय सचिव	श्री प्रवीण गायकवाड़

मनोहर सरकार विकास अपार

सक्षम हरियाणा

शिक्षित युवा-सम्मानित हुआ

सक्षम युवा योजना

100 घण्टे काम
दिलाए मानदेय और मुस्कान

स्नातक व समकक्ष पास	स्नातकोत्तर व समकक्ष पास
मासिक भत्ता एवं मानदेय	

श्री मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

अधिक जानकारी के लिए
नज़दीकी रोज़गार कार्यालय से सम्पर्क करें

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा www.prharyana.gov.in

POSTAL REGD. NO.: DI(C)-11/1409/2017-2019
POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI

श्री जय राम ठाकुर
माननीय मुख्यमंत्री

कृषि विभाग हि.प्र.

निम्न योजनाओं के माध्यम से प्रदेश सरकार किसानों के उत्थान हेतू कृत संकल्प

- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना
- मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना
- मुख्यमंत्री नूतन पालीहाउस परियोजना
- मुख्यमंत्री किसान एवं खेतीहर मजदूर जीवन सुरक्षा योजना
- मुख्यमंत्री ग्रीन हाऊस नवीकरण योजना
- मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना
- प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना
- सौर सिंचाई योजना
- जल से कृषि को बल योजना
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन
- राष्ट्रीय कृषि विकास योजना
- राष्ट्रीय सतत खेती मिशन
- कृषि विस्तार एवं तकनीकी मिशन
- कृषि विविधिकरण परियोजना (जीका)
- सूक्ष्म सिंचाई के माध्यम से कुशल सिंचाई योजना
- उत्तम चारा उत्पादन योजना
- राज्य कृषि यंत्रीकरण कार्यक्रम
- प्रवाह सिंचाई योजना

योजनाओं से लाभ लेने के लिए विकास खंड में तैनात कृषि अधिकारी या जिला के कृषि उप निदेशक से संपर्क करें ।

RNI NO.: DELBIL/2017/73636
DATE OF POSTING: 10-11 DECEMBER, 2019
DATE OF PUBLISHING: 8 DECEMBER, 2019